कर्णावती दर्पण

अहमदाबाद

अंक-4 वर्ष 2011-12

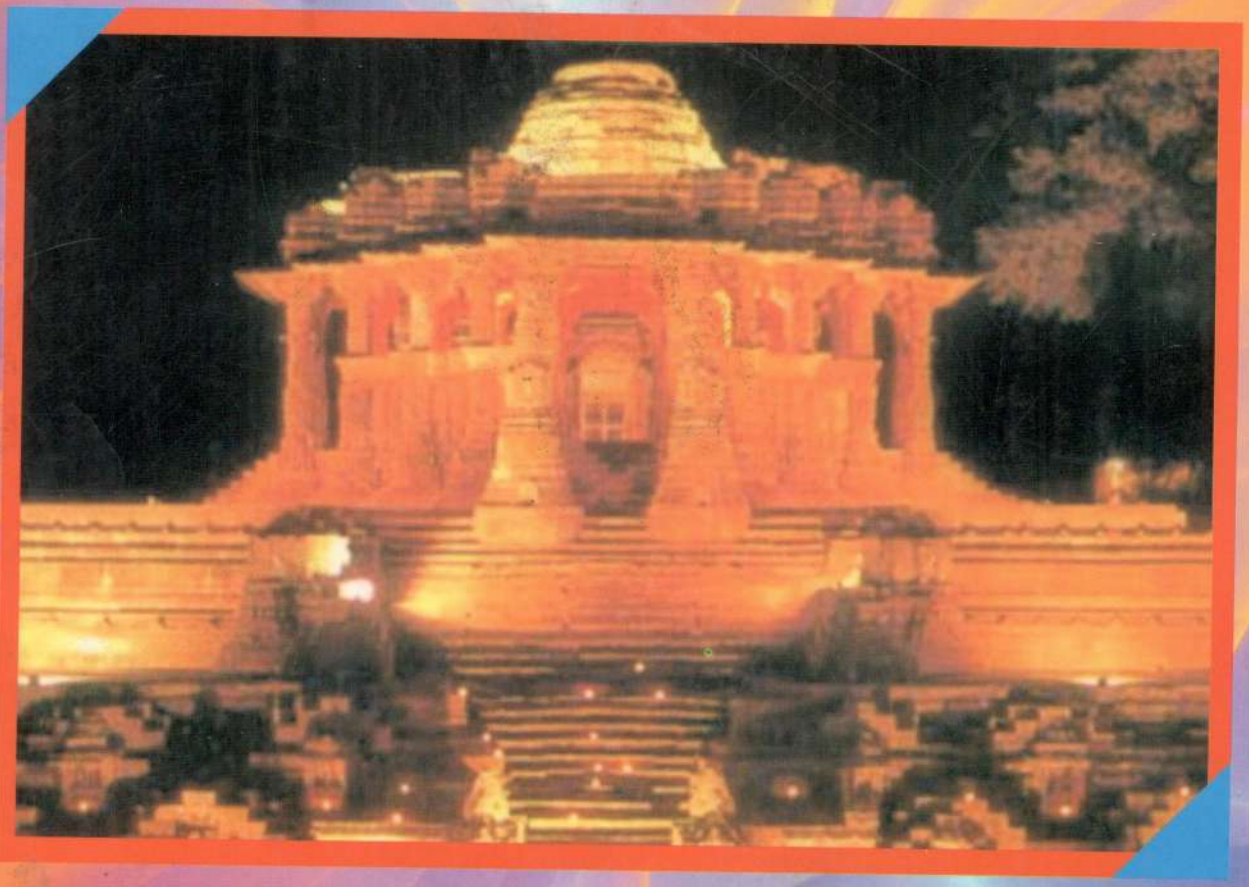

सूर्य मंदिर - मोढ़ेरा - गुजरात

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद - II
नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380 009.

केन्द्रीय राजस्व खेल बोर्ड द्वारा आयोजित
क्षेत्रीय खेल स्पर्धा - 2012 (पश्चिम क्षेत्र) के दौरान हुई
प्रतियोगिताओं में माननीय मुख्य आयुक्त महोदया सीमा शुल्क (मुंबई क्षेत्र-I)
सुश्री शोभा एल. चैरी व मुख्य आयुक्त महोदय सीमा शुल्क (अहमदाबाद क्षेत्र)
श्री एच. के. जैन एवं आयुक्त महोदय केन्द्रीय उत्पाद शुल्क अहमदाबाद - I/II श्री राजू एवं
अपर आयुक्त सीमा शुल्क अहमदाबाद श्री के. वी. एस. सिंह द्वारा प्रदत्त पुरस्कार वितरण की झलकियाँ

कर्णावती दर्पण

अंक - 4 विभागीय पत्रिका वर्ष - 2011 - 2012

संरक्षक

श्रीमती लिपिका मजुमदार रॉय चौधुरी
मुख्य आयुक्त

प्रधान संपादक

श्री राजू
आयुक्त
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद - II

परामर्शदाता

श्री एम. आर. मोहन्ती, अपर आयुक्त
श्री अमरजीत सिंह, अपर आयुक्त

संपादक

श्री प्र.डी. डावरा,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद - 1

सहयोगी

श्री आई.यू. देसाई, प्रशासन अधिकारी (मु.)
श्रीमती निर्मला एम. वाघेला, उप कार्यालय अधीक्षक

प्रकाशक

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद - II
"सीमा शुल्क सदन", नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380 009

इस पत्रिका में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं। इसके लिए संपादक उत्तरदायी नहीं होंगे। किसी दूसरे की रचना को अपने नाम से भेजने वाले अधिकारी एवं कर्मचारी इसके लिए स्वयं उत्तरदायी होंगे।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृ.सं.
01.	बधाई	श्रीमती लिपिका मजुमदार रॉय चौधुरी	
02.	प्रधान संपादक की कलम से....	श्री राजू	
03	संदेश	श्री बी.के. बंसल	
04.	संदेश	श्री मानस रंजन	
05.	संदेश	श्री अमरजीत सिंह	
06.	संपादकीय	श्री. प्र.डी. डावरा	
07.	सरस्वती वंदना	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' माँ भारती के अमर पुत्र	
08.	आम्रपाली - 1, 2, 3	डॉ. मनोज कुमार रजक 'सरकार'	5
09.	अजनबी	सुश्री कविता भटनागर	7
10.	एहसास	सुश्री कविता भटनागर	7
11.	एक साहसिक प्रयास	श्री नरोत्तम सिंह छावल	8
12.	विडम्बना	श्री राम नारायण	10
13.	बहके कदम	श्री राम नारायण	11
14.	मैं ऐसा क्यों नहीं हूँ ?	श्री सुरेश कान्तिलाल श्रीमाळी 'सूरज'	12
15.	इन्सानियत	श्री प्रेमचन्द ए. कन्डावर	13
16.	सुदर्शन चक्र	श्री परेशकुमार वी. सांगाणी	14

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृ.सं.
17.	सोच	श्री धीरज कुमार	17
18.	इंसान	श्री धीरज कुमार	18
19.	मन	श्री धीरज कुमार	18
20.	एक परिचय	श्री शरद सी. मीरानी	19
21.	हिन्दी कार्यालय एवं हिन्दी सप्ताह - 2011	संकलन	22
22.	आयुक्तालय द्वारा पुरस्कृत रचनाएँ (क) लोकपाल बिल कैसा होना चाहिए (ख) क्या सरकारी कार्यालयों में हिन्दी में काम हो रहा है ?	 श्री जयेश आर. छीकनीवाला श्री मनोज कुमार सिंह	 24 27
23.	सहर आई है	श्री वेद प्रकाश गुप्ता 'वेद'	29
24.	आसमां का सवाल	श्री वेद प्रकाश गुप्ता 'वेद'	29
25.	..... तो चले जाना	श्री वेद प्रकाश गुप्ता 'वेद'	29
26.	जी लो जी भर के	श्री वेद प्रकाश गुप्ता 'वेद'	30
27.	वनीकरण एवं वन्य जीवन संरक्षण	श्री अजीत सिंह ए. भोंसले	31
28.	ये बेचारा काम के बोझ का मारा	श्रीमती मोनल दवे	32
29.	शेजार और शेजार धर्म	श्री अजीत सिंह ए. भोंसले	33
30.	खा पी के खिसके	श्री सुरेश कान्तिलाल श्रीमाली 'सूरज'	34
31.	सफर	श्री विकास कुमार गुप्ता	35
32.	आइए हिन्दी में काम करें	संकलन	36
33.	चुटकुले	संकलनकर्ता - श्री शैलेश कुमार शर्मा	40

बधाई

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद-II अपनी विभागीय पत्रिका " कर्णावती दर्पण " अंक - 4 का प्रकाशन कर रहा है।

नि:संदेह विभागीय पत्रिका का प्रकाशन आयुक्तालय के अधिकारीवृंद के राजभाषा प्रेम और भारत संघ के संविधान के प्रति निष्ठा का परिचायक है। हमारा विधिक एवं नैतिक दायित्व भी है कि हम अपना अधिकाधिक काम-काज हिन्दी में करनें का प्रयास करें। मैं उम्मीद करती हूँ कि आप अपना सरकारी काम अधिकतर हिन्दी में करने का प्रयत्न करेंगे।

मैं इस पत्रिका के संपादक मण्डल के सदस्यों तथा लेखकों को बधाई देती हूँ।

लि० मजुमदार

श्रीमती लिपिका मजुमदार रॉय चौधुरी
मुख्य आयुक्त

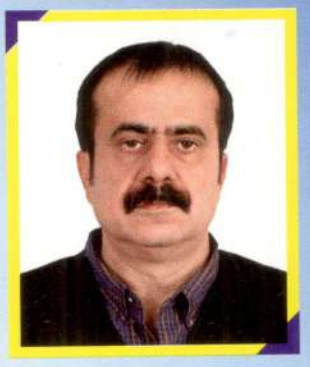

प्रधान संपादक की कलम से....

हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से हिन्दी का प्रचार - प्रसार करना, जन - जन तक इसका संदेश पहुंचाना एक सराहनीय कदम है।

'' कर्णावती दर्पण '' के माध्यम से मैं यह संदेश देना चाहूँगा कि हिन्दी हमारे स्वदेशी स्वाभिमान का द्योतक है एवं हमें अपनी संस्कृति का बोध कराती है। हिन्दी भाषा के प्रचार - प्रसार को बढाना हमारा कर्त्तव्य है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कार्यालय में हिन्दी के उत्तरोत्तर विकास एवं उसके प्रचार - प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(राजू)
आयुक्त

संदेश

हिन्दी पत्रिका '' कर्णावती दर्पण '' का चतुर्थ अंक आपके सम्मुख रखते हुए मुझे अपार आनंद का अनुभव हो रहा है ।

राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने तथा सद्भाव एवं प्रोत्साहन के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिन्दी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने में हिन्दी पत्रिकाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण होता है ।

कर्णावती दर्पण के माध्यम से मेरी सभी अधिकारियों से यह अपील है कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार एवं हिन्दी की अन्य गतिविधियों में पूरे मनोयोग से सक्रिय सहयोग प्रदान करें ।

इस अवसर पर मैं आयुक्तलय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित,

(बी. के. बंसल)
आयुक्त

संदेश

यह अति प्रसन्नता का विषय है कि विभागीय हिन्दी पत्रिका ''कर्णावती दर्पण'' के चौथे अंक का प्रकाशन हो रहा है । यह पत्रिका साहित्यिक प्रतिभा को प्रेरित करने के साथ - साथ राजभाषा संबंधी विभिन्न बातों पर भी पाठकों का ध्यान आकर्षित करती है ।

मैं इस पत्रिका से जुड़े समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देते हुए यह भी कहना चाहूँगा कि स्वतंत्र भारत के सरकारी कामकाज में हम सभी को अपना सरकारी दैनिक कामकाज अधिक से अधिक राजभाषा हिन्दी में करने का प्रयास करना चाहिए । राजभाषा की सेवा हमारे राष्ट्र की सेवा है ।

शुभकामनाओं सहित,

(एम. आर. मोहन्ती)
अपर आयुक्त

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि " कर्णावती दर्पण " अंक - 4 का प्रकाशन किया जा रहा है, जो एक सराहनीय प्रयास है। हमारा प्रयास होना चाहिए कि इसके माध्यम से विभागीय अधिकारियों / कर्मचारियों में रचनात्मकता को बढ़ावा मिले तथा परस्पर आदान - प्रदान का वातावरण बने। इससे उनमें जागरुकता आएगी एवं हिन्दी में काम करने की झिझक भी दूर होगी।

मैं पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित,

अमरजीत

(अमरजीत सिहं)
अपर आयुक्त

सम्पादकीय

विभागीय पत्रिका '' कर्णावती दर्पण '' का चौथा अंक आपके हाथों में सौंपते हुए सुखद अनुभूति का एहसास हो रहा है । वास्तव में विभागीय गृह - पत्रिकाएँ जहाँ एक ओर विभाग तथा कार्यालय की गतिविधियों के बारे में जानकारी देती हैं, वहीं दूसरी ओर अधिकारियों तथा कर्मचारीयाँ की साहित्यिक सृजनशक्ति को तराशने व राजभाषा हिन्दी के प्रचार - प्रसार में भी अहम् भूमिका निभाती है ।

मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आयुक्तालय के अधिकारी एवं कर्मचारी पत्रिका के लिए बढ़चढकर अपनी रचनाएँ भेजेंगे और विभागीय पत्रिका को ध्यान में रखकर हिन्दी भाषा में सृजन करने का प्रयास भी करेंगे । आपके अमूल्य सुझाव आमंत्रित हैं ।

प्र. डी. डावरा
सहायक निदेशक (राजभाषा

माँ सरस्वती की वंदना

वर दे, वीणा वादिनी वर दे
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे ।
वर दे-2.

काट अन्ध उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे ।
वर दे-2.

नव गति, नव लय, ताल छन्द नव
नवल कण्ठ, नव जलद-मन्दरव
नव नभ के नव विहग वृन्द को
नव पर, नव स्वर दे ।
वर दे-2.

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला',
माँ भारती के अमर पुत्र

केन्द्रीय राजस्व खेल बोर्ड द्वारा आयोजित क्षेत्रीय खेल स्पर्धा - 2012 (पश्चिम क्षेत्र) की झलकियाँ

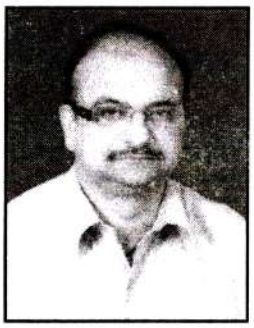

कविवर का परिचय : मनोज कुमार रजक "सरकार", अपर आयुक्त, सेवाकर आयुक्तालय, अहमदाबाद, जन्म : 01 अप्रैल, 1968, पटना ज़िले के मोर गाँव में, शिक्षा : स्कूल - तेलता (कटिहार ज़िला), एवं मोर (पटना ज़िला), उच्च शिक्षा : पटना विश्वविद्यालय एवं दिल्ली विश्वविद्यालय, संस्कृत में एम.ए. एवं पी.एच.डी., माता-पिता : श्रीमती लाखो देवी, दिवंगत श्री द्वारिका प्रसाद रजक, साहित्यिक गतिविधि : गीत, गज़ल व कविता लेखन, प्रथम कविता संग्रह : एकलव्य - भगतसिंह।

आम्रपाली - 1

राजा की चेरी होती
या क्या पता पट्टमहिषी कहलाती?
भार्यारूप में शायद
तृप्त न भी होती
पर माँ अवश्य बन पाती
मगर लिच्छवि है गणतंत्र
विश्व का प्राचीनतम गणतंत्र
और गणतंत्र का
पहला निर्विवाद निर्णय है
'सौंदर्य पर सबका समान अधिकार'
नहीं हो सकती तू किसी एक की
तुम पर सम्पूर्ण वैशाली का
है समान अधिकार
है किसकी हिम्मत
जो तुम्हें गणिक़ा कहे
वधू है तू
वैशाली की नगरवधू
प्राचीन गणतंत्र की अलंकरण
द्रौपदी की परिवर्द्धित संस्करण

सुन्दरता गुनाह हो गई
सुन्दरी तबाह हो गई
सच कहा न आम्रपाली ?

सुन्दरता गुनाह हो गई
सुन्दरी तबाह हो गई
सच कहा न आम्रपाली ?

चाह होगी कोई
तुम्हारी भी तो
देखा होगा स्वप्न कोई
'तुमने भी तो
है न आम्रपाली ?
छोटा सा एक घर
एक प्रियवर
खेत-खलिहान से लौटते हुए
शाम को उसकी प्रतीक्षा
धुँधुँआते चूल्हे पर
आँसुओं से नम रोटी
दो संभोग के बीच
बीड़ी का फैला हुआ धुआँ
फूलता हुआ पेट
स्तन चूसते हुए बच्चे
है न आम्रपाली ?

राजतंत्र होता वैशाली में
तो तू

आम्रपाली - 2

हे बुद्धदेव ! हे गुरूदेव !
चरणधूलि दो
शरण में ले लो
देह है गौरी, करतूत काली
नाम मेरा आम्रपाली

है लोकापवाद
कि सारा नगर
मुझे प्यार करता है
सच्चाई यह
कि बलात्कार करता है
मैं घोर नरक में पड़ी हुई
देह हमारी सड़ी हुई
मुक्ति का कोई मार्ग नहीं
अब तुम्हीं उबार लो
हे अमिताभ ! हे गुरुदेव !

श्रृंगार तो है ऊपर-ऊपर
मैं सिसक रही भीतर-भीतर
निर्मल है मेरा भी अंतर
तुम तो करुणा के सागर
उद्धार करो ! विचार करो !
दीक्षा दो ! ऊर्जा - संचार करो !
हे पूज्यदेव ! हे बुद्धदेव !

सौंदर्य पवित्रता में रहता है और गुणों में चमकता है।

- शिवानंद

सब गुणों को दबाकर स्वभाव सबके सिर पर बैठा रहता है।

- नारायण पंडित

आम्रपाली - 3

सुनो ! सुनो !
लिच्छवि गणराज्य के वासियो
वैशाली - नगरनिवासियो
यह वो आम्रपाली नहीं
जिसे तुम जानते हो
यह वो आम्रपाली है
जिसे पहचान जाओ सैंकड़ों जन्म में भी
तो अपने को धन्य समझो

सावधान सामंतों -सभासदो !
होशियार नगरपार्षदो !
आम्रपाली अब देश से
उठ चुकी है ऊपर
व्यर्थ हो चुके तुम्हारे कानून
मगर फिर भी स्वागत है तुम्हारा
मांस के लिए मत आना
गहरी दृष्टि हो
तो कभी भी आ जाना
पहली बार आम्रपाली
सही अर्थों में
सब के लिए उपलब्ध है

शांत हो जाओ।
सब मौन साध लो।
आम्रपाली ध्यानमग्न है
देखो टूटे न उसकी समाधि
सोचो
कितनी आयी उस पर व्याधि
शांति उसकी अधूरी-आधी
निर्वाण है अभी दूर
पर बुद्ध की करूणा भरपूर
देख रहा हूँ मैं
जाग गयी है आम्रपाली की कुण्डलिनी
और फुफ्फार करती हुई
बढ़ रही है सहस्त्रार की ओर

शांत हो जाओं !
सब मौन साध लो
आम्रपाली समाधिस्थ है

(कविता संग्रह : एकलव्य-भगतसिंह)

अजनबी

अजनबी बन कर भी साथ ही रहे,

दूर रह कर भी साथ ही लगे।

ढूंढती है जब नजरें, वो दिखते नहीं,

दिखते हैं भी तो नजरें मिलाते नहीं।

खामोशी का राज समझ न पायी,

रोष का कारण जान न पायी ।

मुस्कुराते हैं वो तो होती है सुबह

पर यह सुबह रोज कहां होती है ?

चाहा था गुजरे हर पल उन के साथ,

उन्हें पर हमारा साथ गंवारा न हुआ ।

है इस अजनबी से इतना अपनापन

जब होंगे अपने तो क्या होगा आलम ।

जो कशिश है पर इस अजनबी रिश्ते में

ना हो वो कशिश शायद एक बंधी डोर में।

एहसास

जब से तुम्हे
समझा है अपना
ये तन, ये मन
लगने लगा है बेगाना,
लगने लगा है,
मैं
मैं नहीं हूं !
तुम साथ नहीं हो
पर यहीं
आसपास ही तो हो।
मैं तुम्हे छू नहीं सकती
पर तुम्हारे स्पर्श को
महसूस कर सकती हूं।
और यह एहसास
कि तुम मेरे तन को, मन को छू रहे हो
ही,
मुझे यह एहसास
कराता है कि
मैं

अब मैं नहीं हूँ
मैं तुम्हारे लिये हूँ।

सुश्री कविता भटनागर
अपर आयुक्त

(कविता संग्रह : रिश्तो की तन्हाईयाँ)

दु:ख आ पड़ने पर मुस्कराओ। उसका सामना करके विजयी होने का साधन इसके समान और कोई नहीं है।

- तिरुवल्लुवर

चिंता का क्या लाभ ? चिंता तो कभी भी उचित नहीं थी।

- जॉर्ज आसफ

संतुष्ट मनवाले के लिए सभी दिशाएं सुखमयी हैं, जैसे खड़ाऊं पहनने वाले को कंकड़, कांटे आदि से दु:ख नहीं होता।

- भागवत

एक साहसिक प्रयास

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के कार्यालय अधिकतर किराये की पुरानी इमारतों में एक बदहालत में स्थित थे, जिनका रखरखाव व अंदरूनी ढांचा इतना दयनीय स्थितियों में वर्षों से बना हुआ था कि इसकी सुध लेने और इसे संवारने वाला कोई नहीं था। लेकिन अराजपत्रित द्वितीय, तृतीय व चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों हेतु कार्यालय व स्थानों की देखभाल / मापदण्ड काफी समय से उपेक्षा के ही शिकार रही थी। वहीं आज भी 50 साल पुरानी कुर्सी, टेबल, रेक्स, धूल भरी फाइलों के ढेर, बिखरे पड़े पुराने रिकार्ड, भीनी गंध जो वर्षो से इस 98 प्रतिशत कर्मचारियों को दीमक की भांति खोखला कर रही थी।

उच्च अधिकारीगण प्रथम श्रेणी में आकर अपना एकमात्र इकलौता कार्यालय (कमरा) हर साजो सामान सँवार कर एक कचरे के ढेर पर रखे डब्बे की भाँति शोभायमान होते हैं।

इस कुलीनतंत्र प्रशासन में कर्मचारियों को भी एक सुविधापूर्ण कार्यालय का अधिकार है लेकिन कुछ प्रथा समझिए या इच्छा शक्ति की कमी अथवा अन्य कारणों से निम्न स्तरीय कार्य हमेशा से कुप्रबंधन, मूल सुविधाओं के अभाव से जूझते रहते हैं। मैंने पिछले 31 सालों से यह महसूस किया है कि अन्य क्षेत्र जैसे बैंकिंग व सरकारी उपक्रम की तरह हमारे कार्यालय क्यों नहीं है। मन में यह भाव इतने सालों से आता है और मर जाता है क्योंकि किसी उच्च स्तरीय अधिकारी के सामने यदि कोई सुझाव रख दिया तो मानो गुनाह कर दिया हो ऐसा लगता था। मेरी जब भी किसी नये कार्यालय में बदली होती तो वही धूल भरी फाईलें, वही पुराना कबाड़ से सुसज्जित कार्यालय नज़र आता। मेरे मन में ढेर सारे प्रश्न आते व मिट जाते। मस्तिष्क कोश कोश होकर कह रहा है - हे सरकारी कार्यालय यह दुर्दशा क्यों ?

मेरा भी नम्बर प्रथम श्रेणी के प्रमोशन में आ गया और मुझे एक सुसज्जित केबिन भी मिल गया। लेकिन मन में इतने वर्षों से किसी सुंदर कार्यालय में कार्य करने की तमन्ना अधूरी ही रही।

एक समय अहमदाबाद - द्वितीय के मण्डल प्रथम एवं द्वितीय कार्यालय को खाली करने के लिए बाध्य होना पड़ा। उस समय कोई उपयुक्त स्थान किराये पर लेकर आदर्श कार्यालय बनाने का भाव फिर उमड़ पड़ा, लेकिन ज्यादा किराया होने के कारण कोई उपयुक्त सजावट वाला कार्यालय हमारी सरकारी नीतियों एवं केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (सीपीडव्ल्युडी) के मापदण्ड के कारण नहीं मिल सका। कुछ प्रयासों एवं अन्य कर्मचारियों की मदद से कार्यालय की एक जगह सीपीडव्ल्युडी के मापदण्ड के अनुसार ले ली गई तब हमारे कर्मचारियों के चेहरे पर सिर्फ आशावाद के चिन्ह उभर रहे थे क्योंकि यह महसूस हो रहा था कि कोई बड़ी जंग जीतने में इस बार हम होंगे कामयाब।

इसी दौरान एक देवदूत के रूप में, एक नयी आयुक्त महोदया का आगमन हुआ जिनकी कार्यशैली-दूरदर्शिता का हमें आभास हो गया था। सुश्री एम. माइकिल ने बिना बताए एक परिस्थिति का एहसास करवाया कि यह नया कार्यालय एक आदर्श कार्यालय बने। उनकी इस पहल को देख पूरा कर्मचारी-वर्ग स्तब्ध हो गया कि इस प्रकार कि विचार धारा कोई स्वप्न तो नहीं। सभी यह सोचते रह गये कि कितने ही आयुक्त, मुखय आयुक्त, मेम्बर, आदि आए और आश्वासन देकर चले गए और हम वर्षों उसी स्थिति में बने रहे क्योंकि सभी की तमन्ना एक आदर्श कार्यालय के रूप में जागती और कुछ ही समय में समाप्त हो जाती लेकिन सुश्री माइकल की दूर-दृष्टि, कटिबद्धता, निर्णायक भूमिका, विश्वास व कार्यशैली परवान चढ़ती गयी तथा एक के बाद एक समस्या का हल होता गया। एक आदर्श कार्यालय का निर्माण अग्रसर होता रहा। हमारे कर्मचारी यह विश्वास करने के लिए तैयार नहीं थे कि हमें ऐसा भी कार्यालय नसीब हो सकता है। लेकिन अल्पकाल में ही यह सबकुछ किसी चमत्कार में पूर्ण हो गया। वह दिन भी आ गया अहमदाबाद के उच्च अधिकारीगण को बुलाया व दिखाया कि मन में अटूट विश्वास एवं कार्यशीलता तो एक कार्पोरेट समान कार्यालय केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के कर्मचारियों को भी मिल सकता है।

सभी कर्मचारी इस कार्यालय को देखकर विभिन्न प्रकार के प्रश्नों से जूझने लगे - क्या यह संभव है ? कैसे हुआ ? वे अनेक प्रश्न व प्रेरणा लेकर चले गये। शायद उनमें से कुछ अधिकारी इस प्रकार का कारनामा अवश्य दिखायेंगे। आज भी, पालडी स्थित यह कार्यालय एक मिसाल बन गया है, जो सभी के लिए एक नई सोच को जन्म देता है। उद्योग जगत में एक नया संदेश प्रसारित हुआ है कि क्या उत्पाद शुल्क में ऐसा उच्च अधिकारी भी है? इस उपलब्धता को आने वाली पीढ़ी क्या उपयोग करेगी? लेकिन जिस व्यक्ति ने इसमें योगदान दिया - क्या और कैसे प्रबन्ध किया - सुश्री माइकल सदैव एक प्रेरणा बनी रहेंगी, जिनका योगदान स्मरणीय रहेगा। उनके लिए शब्दकोश कम हैं। शब्दों में प्रशंसा नहीं की जा सकती। उनकी रुचि व स्वयं उपस्थित होना इत्यादि एक सत्यनिष्ठा को दर्शाता है। हमारे मंडल प्रथम व द्वितीय के कर्मचारियों हेतु सदा के लिए आदर्श कार्यशाला वाला कार्यालय प्रदान कर दिया।

नरोत्तमसिंह छावल
सहायक आयुक्त

वही पवित्र है, कुलीन है, धीर है और वही प्रंशसनीय है, जो विपत्ति में भी अपना स्वभाव नहीं छोड़ता।

- प्रकाशवर्ष

संतुष्ट मनवाले के लिए सदा सभी दिशाएं सुखमयी हैं, जैसे जूता पहननेवाले को कंकड़ और कांटे आदि से कष्ट नहीं होता।

- भागवत

विडम्बना

कितनी अनगिनत प्रकृति की
वो घटाएँ, जिन पर कभी नाज रहा होगा ।
आखिर ऐसा क्यों किया मानव ने,
सभ्यता के नाम पर खुद अपनी,
ही कब्र खोद डाली ।
जब तुम ना थे, तो यह प्रकृति
कितनी वीरान व मायूस रही होगी ।
अरबों वर्ष गुजारे हैं इसने तेरी प्रतीक्षा में।
जब तुम जमीं पर आए
तो आश्रय देने वाली यही थी
भूख प्यास मिटाई है इसने तेरी ।
अपने इस विशाल वनस्पति ।
रूपी खजानों को अर्पण कर ।
जब तुम आत्मनिर्भर हो गए
तो तुमने इसे ही रौंद डाला ।
आखिर कहीं से गूँज उठी एक किलकारी।
अगर यही है मानव विकास की कहानी।
तो इसे बंद करो ! बन्द करो।

मानव रहित ब्रह्माण्ड की कल्पना करना भी व्यर्थ है।
पर मानव प्रकृति ने कब यह स्वीकारा है।
मूक होकर भी हर मोड़ पर,
व्यथा कह रही है।
तुम ना लहु लुहान करो मेरे हृदय को ।
पर यह मानव मानता कहाँ ?
इसने तो बस यही ठाना है।
प्रगति के नाम पर अपने ही
अस्तित्व को मिटाना है।
पर याद रखो ।
तुम तो मिट ही जाओगे।
पर जो पीढ़ियां जन्म लेंगी,
पूछेंगी अधीर होकर,
वृक्षों से रहित इस भूमि से,
रूखी व खदर वादियों से,
और न जाने कितनी वीरानगियों से।
कहाँ गई वो कल-कल करती नदियां ।
स्वच्छंद विचरण करते पक्षियों
की किलकारियां और न जाने

राम नारायण
सहायक आयुक्त

मेंढक कमलिनी के पराग का रस लेना नहीं जानता।

- सोमदेव

सुख तो स्वभाव से अल्पकालिक होते हैं और दुःख दीर्घकालिक ।

- बाणभट्ट

बहके कदम

वतन पर मरने वालो यह तुम्हें क्या हो गया।
नहीं रहा वो समां, हर जवां बुझा-बुझा हो गया।
एक जमां था कि बहा था लहु मेरी बेकारी में।
अब बदली हैं परिस्थितियाँ, लगता है हर कदम हैरानी में।
आज दुःख नहीं है लहु बहने का।
दुःख है कि धारा से प्रवाह कैसे विमुख हो गया।
हर ओर है शक्ति मरघट की, नजर आता है नहीं कोई किनारा।
तूने दिया है विश्व को शक्ति का संदेश अतुल्य
आज हुआ है कैसे गैरत यारा।
क्या भूल गए तुम अपनी मान मर्यादाएँ
हर तरफ है जुनूनू, झुका है मस्तिष्क आँखें नजर भिगोए।
अपने ही आगे है आगे, गैर ऐसा क्या है यह हो गया।
ऐसी तो उम्मीद न थी यारो कुछ रहम खाओ।
हर इंसां में बसता है वो बस नत मस्तक हो जाएं।
सृष्टि की तुम अनुपम कृति, बस इतना जान लो।
निस्वार्थ भाव सेवा रूपी पुष्पों का कर अपर्ण मन मन्दिर संवार लो।
फिर महकेगी यह मानव रूपी बगिया जैसे गदराया
हो बसंत भरा भरा ।

राम नारायण
सहायक आयुक्त

जब 'मैं' और 'तू' तेरे बीच न रह जाएंगे, उस समय मंदिर, मस्जिद और गिरजा सब तेरे लिए समान हो जाएंगे।
- शब्सतसी

मैं ऐसा क्यों नहीं हूँ ?

राह चले सरल लोगों को,
अपने गरूर का तमाशा दिखाऊँ,
और अपने से ज्यादा गरूर वालों के,
आगे बिना सोचे, बिना वजह झुक जाऊँ।
किन्तु, सरल लोगों से विनम्रता पूर्वक पेश आऊँ,
और ज्यादा गरूर वालों को, अपने भीतर झांकने का मौका
दे पाने वाले इंसान जैसा क्यों नहीं हूँ ?

सच्चाई का स्पर्श किए बिना,
झूठ को गले लगाने में फायदा है,
ऐसा सोचना और फायदे पे
चलना । इस भरम में
परभाव को छोड़कर स्वभाव में
जीने वाले इंसान जैसा क्यों नहीं हूँ ?

अपने आपको दुनिया की रफ्तार के मुखौटे में छिपाए बिना,
अपने आप में झांककर, अपने आप को स्वीकार कर,
कुछ सोच भी लेता और कम से कम अपने ही
जीवन को व्यर्थ न करने वाला
इन्सान जैसा क्यों नहीं हूँ ?

जिन्दगी के हर पल के भूल - भुलैये में,
अपने आपको झुठलाने में,
अमूल्य जीवन को व्यर्थ करने का दुःसाहस
रोकता और जीवन का मतलब जहन में
भरनेवाला, फिर भी आम
इंसान की तरह जिन्दगी जीने वाले
इंसा जैसा क्यों नहीं हूँ ?

सुरेश कान्तिलाल श्रीमाली 'सूरज'
अधीक्षक

इन्सानियत

अर रररररर यययय मर गया
जी यार निर्दोष मर गया
उस हाथी जैसी गाड़ी ने और
सांड जैसे ड्राइवर ने कुचल दिया
लोहे के सैलाब में लुढक गया
नही कोई उसे उठा रहा
सब शून्य मस्तिष्क होकर देख रहे
कोई 108 नहीं बुला रहा
आखिर एक इंसान में इंसानियत जागी
उसने जोर से चिल्लाया
और कारवां दौड़कर आया
नब्ज देखी तो उसकी
सांस धीरे - धीरे चल रही थी
सबकी आस में आस बन्ध रही थी
तुरंत सभी ने उठाकर
नजदीक के अस्पताल में भर्ती कराया
और एक घर का चिराग
बुझते बुझते जी पाया।

पी.ए. कन्डावर
सेवानिवृत्त अधीक्षक

अपनी निंदा और प्रशंसा, पराई निंदा और पराई स्तुति-ये चार प्रकार के आचरण श्रेष्ठ पुरुषों ने कभी नहीं किए।

- वेदव्यास

सुदर्शन-चक्र

भारतीय संस्कृति का "सुदर्शन चक्र" यह मात्र एक 'मिथक' या कपोल कल्पना नहीं है, बल्कि एक महान वैज्ञानिक हकीकत है।

गुरुत्वाकर्षण की शक्ति को नियंत्रण में रखने की विद्या अथवा कला जिसने सिद्ध की हो, वह सुदर्शन चक्र चला सकता है।

सुदर्शन चक्र तो क्या, वह सभी प्रकार के यंत्र, चक्र, वाहन आदि भी यह कला सिद्ध कर्ता चला सकता है।

कृष्ण भगवान, भगवान भले हों परंतु वे अति महान वैज्ञानिक थे।

सामान्यतः हम अपने भूतकाल की भव्यता की आलोचना करते हैं, और उसकी उत्कृष्टता एवं सर्वोपरिता व उज्जवलता के बखान करते रहते हैं। यह एक स्वाभाविक क्रिया है। मोबाइल, फोन या सीधे प्रसारण को हम महाभारत के संजय-धृतराष्ट्र संवाद स्वरूप स्मरण करना नहीं भूलते हैं।

वायुयान की खोज राइट ब्रादर्स द्वारा 1903 में अनेक परीक्षणों एवं अथक प्रयत्नों के पश्चात 5 वर्षों में की, जबकि उसके प्रारंभिक प्रयासों को तत्कालीन वैज्ञानिकों द्वारा केवल इसीलिए खंडन किया गया कि हवा में उससे भारी पदार्थों को उड़ाना असंभव है। किंतु हम भारतीयों के राम के जमाने से प्रसिद्ध "पुष्पक" (विशेष नाम) को सामान्य वायुयान या हवाईजहाज नहीं था, इसे स्मरण करना नहीं भूलते हैं।

इसी प्रकार हमारे ऋषियों ने शारीरिक विज्ञान में अंगों के नाम, उनके कार्यों के आधार पर दिए जिसे भूलना नहीं चाहिए। जिस प्रकार हर + दय = हृदय। जो रक्त को सींचता एवं दय है। इस प्रकार यह पंप की तरह कार्य करता है। किन्तु पश्चिम में "मेडिकल साइंस" तो विलियम हार्वी को उनकी 1628 के कार्य से मानव समाज को हृदय अर्थात् कि "HEART" की कार्यवाही से अवगत करवाने का श्रेय देते हैं।

इन सम्पूर्ण विषयों पर हम वर्तमान में अनुसंधान के बदले "नकल" करके संतोष करने वाली प्रज्ञा के रूप में जी रहे हैं।

"शून्य" की खोज भारतीय संस्कृति की देन है। चाहे उसके खोजने वाले का नाम न लिया जाता हो, फिर भी आज के 0 एवं 1 का अस्तित्व इसका आभारी है.... कि जो कम्प्यूटरों की भाषा तैयार करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इस समय अंतरिक्ष में होटल बनाने की तैयारियों के बारे में जानकर, विश्वामित्र ऋषि ने त्रिशंकु को आकाश में रहने के लिए सृष्टि का सृजन किया था, उसकी याद आती है। लेकिन आज अभी भी अपनी भारतीय संस्कृति के पास दुनिया को देने लिए बहुत कुछ है।

आजकल ऊर्जा के स्रोत हेतु कई चर्चाएं, सेमिनार, अनुसंधान एवं धन का उपयोग किया जाता है। परन्तु यह सबकुछ मात्र आधुनिक विज्ञान की समझ में आए ऊर्जा स्रोत के संबंध में होता है जैसे पेट्रोलियम, कोयला, सौर ऊर्जा न्यूक्लियर ऊर्जा, हाइड्रोलिक पावर आदि। इन सामान्य ऊर्जा स्रोतों में अनेक कमियां है जैंसे सीमित मात्रा जो किसी समय खत्म होनी ही है। प्रदूषण फैलता है। ये मानव जाति को जीवन जीने के लिए अनेक नई समस्याओं का निर्माण करते हैं। न्यूक्लीयर ऊर्जा के भयभीत स्थान मानवजाति को बहुत डराते हैं और हाइड्रो प्रोजेक्ट खर्चीले हैं तथा सरलता से छोटे पैमाने पर उत्पादन संभव नहीं है और इराक का युद्ध गर्भित रुप से हम सब जानते ही हैं।

'शून्य' की खोज के पश्चात मानवजाति को शांतिपूर्ण उपयोग हेतु भारत द्वारा देने योग्य हे तो वह एकमात्र 'सुदर्शन चक्र' है। आगे, यह स्मरण रहे कि भारतीय संस्कृति में गोल-गोल बाते नहीं है और न ही ऐसा या वैसा कोई चक्र भी नहीं है - स्पष्टतया 'सुदर्शन चक्र' ही है। हर रोज माताजी या भगवान श्री कृष्ण के दर्शन करते समय शक्ति का अवतार के हाथों में, 'शक्ति-पावर' के साधन को नजर अन्दाज करके एक मात्र नाम, जप करके पूजा करके संतोष मानने वाली यह प्रजा किसी अमेरिकन या यूरोपियन द्वारा 'सुदर्शन चक्र' को पेटेंट किये जाने का इंतजार कर रही है क्या ? यह ऊर्जा का एक अगुआ स्रोते है। केवल नजर की जरुरत है।

विज्ञान का "थर्मोडायनेमिक्स" एवं कन्वर्जेशन ओफ एनर्जी के नियमानुसार शून्य में से सृजन करना संभव नहीं है। परन्तु हम जिसे शून्य मानते हैं वह शून्य नहीं भी हो सकता है। 'सुदर्शन चक्र' की खोज यात्रा में गुरुत्वाकर्षण बल बहुत ही प्रभावी होता है। चाहे विज्ञान की दृष्टि से अन्य बल, चुम्बकीय तत्व, इलेक्ट्रिक तत्वों की तुलना में वह बहुत ही कमजोर है। परन्तु वह निरंतर है, सर्वत्र है एवं बिल्कुल मुफ्त है। और फिर यह कभी खत्म नहीं होता है। पृथ्वी के समग्र क्षेत्र पर ज्यादा या कम मात्रा में प्रभावी है। इस प्रभाव के लिए कोई मूल्य चुकाना नहीं होता है।

ऐसा यह गुरुत्वाकर्षण बल शक्ति का एक ऐसा स्रोत है जो मानवजाति की ऊर्जा की भूख को (तथा पेट की भूख को भी) शांत करने के लिए किसी भी स्रोत प्रक्रिया बिना सक्षम है।

किसी भी देवी या देवता के हाथों में इसे शस्त्र के स्वरूप में देखकर उसे मानव द्वारा प्राप्त करना असंभव लगे यह स्वाभाविक है। परन्तु जब कृष्ण नामक एक व्यक्ति ने इस पृथ्वी पर अवतार लिया है, इसे हम स्वीकार करते हैं तो कृष्ण के पास इस 'तकनीकी' की जानकारी कहां से आयी, उसे जानना जरूरी है।

परशुराम ने भगवान कृष्ण को यह टेक्नोलोजी अन्तरित की थी ऐसा उल्लेख है। यह कृष्ण वास्तव में एक महान वैज्ञानिक थे, इसका सबूत तो उन्होंने गोबर्धन पर्वत को कानी उंगली पर उठाया था, इतना ही पर्याप्त है। यह तो तभी संभव हो सकता है यदि निश्चित क्षेत्र में गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव को उस क्षेत्र में स्थित पदार्थ से नष्ट किया जाए। कृष्ण ने यह काम इन्द्र को झुकाने के लिए कर दिखाया था।

अन्य तो ठीक परंतु भारतीय वैज्ञानिक भी इसे 'माइथोलॉजिकल स्टोरी' कहते हैं। रसियन वैज्ञानिक किसी भी क्षेत्र (पृथ्वी) की ग्रेविटी कैसे घटाकर रोकेट छोड़ने में कम ऊर्जा प्रयुक्त हो सके, इस सम्बन्ध में प्रयोग कर रहे हैं।

कृष्ण ने गुरुत्वाकर्षण को रोकने का प्रयोग महाभारत के युद्ध के समय भी किया था। जयद्रथ को मारना, अर्जुन की प्रतिज्ञा पूर्ण करना, छिपे हुए जयद्रथ को बाहर लाने के लिए पृथ्वी के रण-युद्ध में सूर्यग्रहण होने से जयद्रथ उसे संध्याकाल समझकर बाहर आए थे और अर्जुन ने सूर्यग्रहण पूर्ण होने पर जयद्रथ का वध किया था।

हम जानते हैं कि सूर्यग्रहण के लिए चन्द्र सूर्य एवं पृथ्वी के बीच में आने से होनी वाली छाया के कारण छाया के क्षेत्र में अन्धकार छा जाता है और चन्द्र का भ्रमण पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल का आभारी है। यदि पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल बढे या घटे तो चन्द्र उसका परिभ्रमण मार्ग बदल सकता है।

महाभारत के युद्ध के समय जयद्रथ को मारने के लिए सन्ध्याकाल दिखाई दे ऐसा काल जरूरी था। गुरुत्वाकर्षण के बल पर नियंत्रण रखने की शक्ति ज्ञान हो वह उसके द्वारा ग्रहण भी करा सकता है। इसकी जानकारी कौरव पक्ष के बड़े ज्ञानियों, महाबलियों को भी नहीं थी। इसीलिये सूर्यग्रहण के कारण संध्याकाल की तरह दिखाई देने पर जयद्रथ बाहर आया था। अब चन्द्र को अपने मार्ग से भटकाकर पुनःयोग्य स्थान पर लाना किसी छोटे से वैज्ञानिक का काम नहीं है। यह तो सम्पूर्ण पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण पर प्रभुत्व रखने वाला ही व्यक्ति कर सकता है। इसे कृष्ण ने कर दिखाया।

अर्जुन का रथ जमीन से ऊंचा घूम रहा था। इसका कारण भी उसका वैज्ञानिक सारथी था। अंत में कृष्ण के वजन का प्रसंग तराजू के दोनों पलड़ों में से एक में स्वयं कृष्ण एवं दूसरे में मात्र सवा वाल वाली नाक की वाली रखने पर पल्ले बराबर वजन के हो गए थे उसमें भी गुरुत्वाकर्षण बल की अपने शरीर पर प्रभाव के 'कंट्रोल' की बात है।

इजिप्त (मिस्र) के पिरामिड के पत्थरों को हटाने एवं उन्हें योग्य स्थान पर रखने के लिए किस प्रकार की तकनीकी तत्कालीन संस्थापकों ने अपनायी होगी यह आज के वैज्ञानिक इन पत्थरों के आकार एवं वजन से समझ सकते हैं कि इतनी सतर्कता से, इतने वजन व माप वाले पत्थरों को व्यवस्थित लगाना आज के स्थापक भी विचार कर सकते हैं कि उन लोगों के पास 'ग्रेविटी कंट्रोल' की विद्या थी क्या ?

हमें खेदपूर्वक यह नोट करना होगा कि वर्तमान में कोई भी भारतीय संस्थान "इण्डियन इंस्टीट्यूट ओफ साइंस", "इण्डियन इंस्टीट्यूट ओफ टेक्नोलोजी" या "डिफेंस रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट ओर्गेनाइजेशन" ऊर्जा के ऐसे स्थानापन्न मुक्त स्रोत शोध नहीं करते हैं। ये लोगों को "अंधश्रद्धा" में से बाहर निकलने वाली समझदारी की बातें करने वाले वैज्ञानिक 'निरंतर घूमता चक्र' की बात होने पर थर्मोडायनेमिक्स या कन्जर्वेशन ओफ एनर्जी के नियमों का आधार लेकर विज्ञान में अपना अंध विश्वास व्यक्त करते हैं।

थर्मोडायनेमिक्स के प्रथम व द्वितीय नियम का उल्लंघन करने वाला साधन, शोध या योजना अब तक मालूम न होने से अमेरिकन पेटेंट ओफिस उन वैज्ञानिकों के साथ सम्पूर्ण सहमत है जो ऐसी शोध को 'असंभव' मानते हैं। जो समाज कभी भी 'सुदर्शन चक्र' के विषय में जानता ही नहीं है वह ऐसा करे उसे समझा जा सकता है किन्तु जो संस्कृति 'सुदर्शन चक्र' का खण्डन करे यह वास्तव में खेदपूर्ण है।

भारत का पेटेण्ट एवं कोपीराइट कानून स्वयं पश्चिम के पेटेण्ट एवं कोपीराइट कानून की नकल है। जो कानून नकल के प्रति रक्षण देने के लिए बनाया जाता है, वह स्वयं एक अन्धी नकल है..... देखो तो जरा।

भारतीय समाज 'सुदर्शन चक्र' को किस दृष्टि से देखता है, उसे जानने के लिए धर्म एवं कथित धार्मिक गुरुओं के पास जाना ही पड़ता है क्योंकि भारत में धर्म एवं विज्ञान जुड़े हुए हैं। बहुत कुछ तो धर्म ने विज्ञान को उलझा दिया है। इंटरनेट पर चर्चा में एक धार्मिक व्यक्ति ने तो इस देवी साधन को मानवजाति हेतु उपयोग में लाना उचित नहीं है और इस पर मात्र भगवान का एकाधिकार है - ऐसा कहा था। शायद इसीलिए ही हम "पुष्पक" के नाम की पूजा करी और राइट ब्रदर्स को मालुम नहीं था कि यह मात्र भगवान का एकाधिकार है, वरना अविष्कार असंभव ही रहता।

भारतवर्ष में 'सुदर्शन चक्र' की खोज के लिए प्रयास एकाद घटना को छोड़कर कोई विशेष नहीं हुए हैं। यद्यपि इतिहास में 'भास्कराचार्य' ने पारा की सहायता से बनाया गया विश्व का प्रथम 'सुदर्शन चक्र' दर्ज हुआ है। परंतु उसके बाद 16 वीं शताब्दी तक पश्चिम में स्वयंभू घूमने वाले चक्र पर कई अनुसंधान हुए हैं और अभी भी हो रहे हैं, चाहे विज्ञान के स्थापित नियम इसे अंसभव मानते हों। वास्तव में विज्ञान की शुरुआत इस प्रकार के असंभव का हल ढूंढने से होती है। ऐसा अनेक पश्चिम के नागरिक मानते हैं। विज्ञान के कई नियम, परिभाषाएं आदि के समय-समय पर संशोधन किया जाता है और निरंतर शायद संशोधन करते रहना ही विज्ञान का मूल लक्षण है।

18 वीं एवं 19वीं शताब्दी में 'सुदर्शन चक्र' के शोध के सम्बन्ध में असंख्य 'पेटेंट' आवेदन पत्र पेटेंट कार्यालयों को यूरोप एवं अमेरीका में मिलने लगे और इन आवेदन पत्रों की वास्तव में सत्यापन जांच नहीं की जाती थी एवं कई बार आम प्रजा जो विज्ञान में विश्वास रखकर निवेश करने को आगे आती उन्हें मनपसंद परिणाम न मिलने से विश्वासघात होने का अहसास होता था, इसीलिए पेटेंट कार्यालयों ने अन्य शोध की तुलना में 'स्वयंभू' घूमने वाला चक्र की शोध हेतु प्रायोगिक यंत्र के दर्शन के बिना पेटेंट देने से इंकार कर दिया।

साथ ही साथ तत्कालीन वैज्ञानिकों से भी ऐसी कोई शोध संभव नहीं है, इसके नियमों की संरचना करके हमेशा के लिए प्रतिबंधित क्षेत्र स्थापित कर दिया।

वर्तमान युद्ध, पेट्रोलियम उत्पाद हेतु या यूरेनियम की उपलब्धि के लिए न्यूक्लीयर ऊर्जा का बवाल, ग्लोबल, वार्मिंग एवं कुदरत की असाधारण हलचल मानव जाति को उनके द्वारा स्वयं रखे गए अवरोधों को हटाने के लिए निश्चित रुप से मजबूत करेंगे तथा 'सुदर्शन चक्र' स्वयंभू घूमने वाला चक्र की शोध के लिए निश्चित रुप से सामने आना होगा। विद्यमान सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक सभी प्रबंध एवं मानदण्ड बदलने के लिए मजबूर होंगे।

परेशकुमार वी. सांगाणी
अधीक्षक

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय अहमदाबाद - II में दिनांक 12-09-2011 से 19-09-2011 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया । इस दौरान (1)हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन, (2) हिन्दी निबन्ध लेखन, (3) हिन्दी श्रुतलेखन एवं (4) हिन्दी काव्य पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इस आयोजन की कुछ झलकियाँ ।

हिन्दी सप्ताह का आयोजन वर्ष - 2011

दिनांक 13-09-2011
हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता
समय :- 11.30 से 1.00 बजे तक

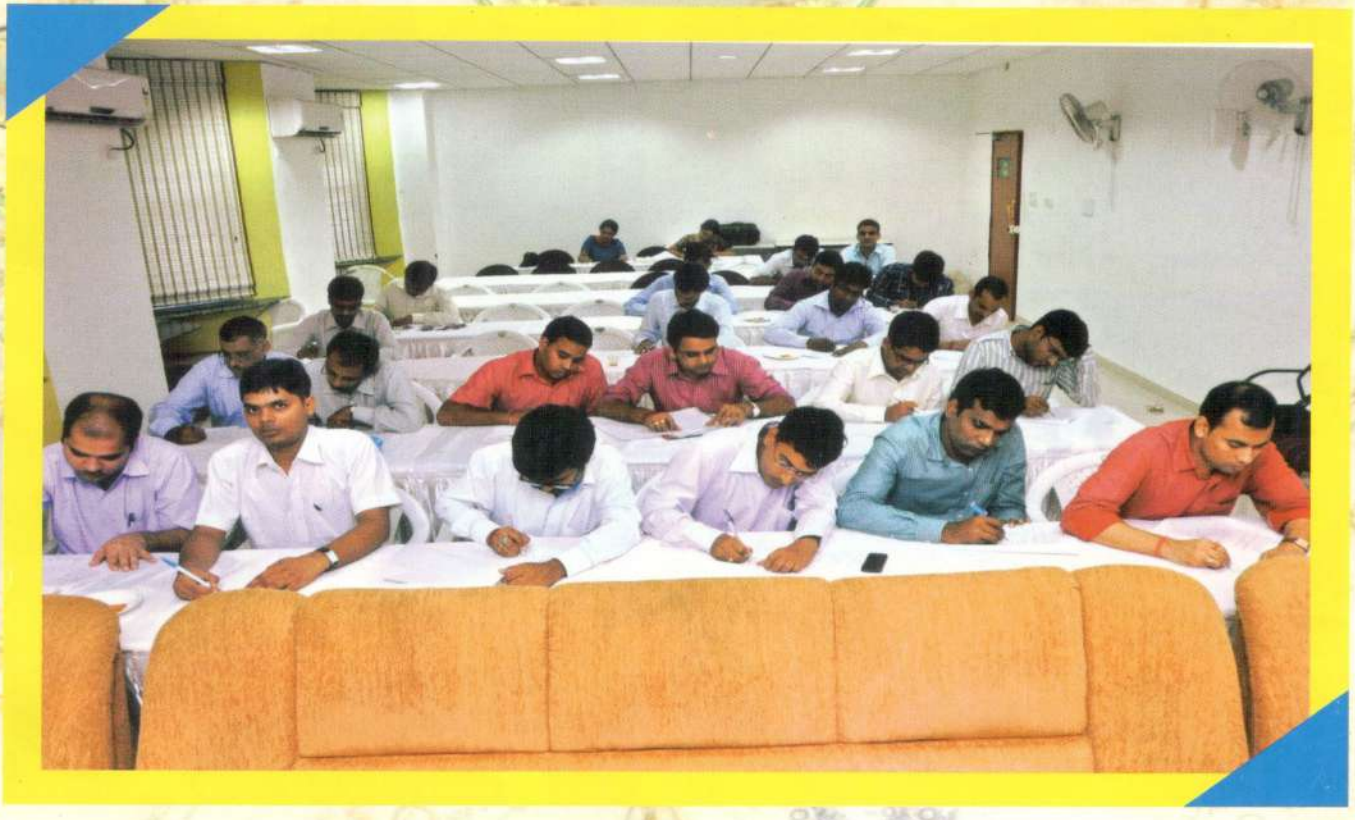

हिन्दी सप्ताह की झलकियाँ ।

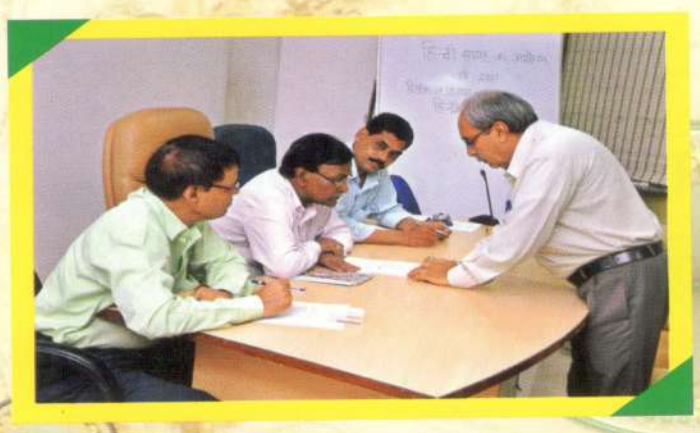

हिन्दी सप्ताह की झलकियाँ ।

हिन्दी सप्ताह की झलकियाँ ।

सोच

सोचो तो सबकुछ जिंदगी,
ना सोचो तो बेकार है,
पाया न उसे तो, जीत भी हार है,
इस रंग बदलती दुनिया में,
धोखेबाज तो हजार हैं,
हर कदम पर साथ देने वाला,
सच्चा हमारा दिलदार है,
बातों ही बातों में अपना बना गया,
समझ में आया कि वो तो कलाकर है,
जिंदगी थी हमारी सूनी,
जिसमें उनका आना एक चमत्कार है।।

सोचो तो सबकुछ जिंदगी,
ना सोचो तो बेकार है,
तोड़ देंगे सारे कायदे-कानून,
अड़चनें या जो भी दीवार है,
उनके मिलने पर हुए,
सारे सपने साकार हैं,
उनकी पसंद सर आंखों पर,
नापसंद भी स्वीकार है,
गमों को पल में दूर भगा दे,
हस्ती इतनी शानदार है,
जिंदगी के मायने बदल दिये जिसने,
ऐसा हमारा प्यार है।।

सोचो तो सबकुछ जिंदगी,
ना सोचो तो बेकार है,
समझ में नहीं आता,
क्यों छाया हुआ अंधकार है,
जबसे हुई है उनसे मुलाकात
खूबसूरत लगने लगा संसार है,
एक दिन मिलन जरूर होगा,
उस दिन का बेसब्री से इंतजार है,
तन्हाइयों से निपटने के लिए,
हमारे पास उनकी यादगार है,
एक-दूजे पर अटूट विश्वास,
यही हमारी चाहत का आधार है।।

सोचो तो सबकुछ जिंदगी,
ना सोचो तो बेकार है,
आंधी-तूफानों में भी अडिग रहेंगे,
जबतक खुद मददगार है,
नजर आते हो हर जगह,
क्या करें हम भी तो लाचार हैं,
छोड़नी पड़े अगर दुनिया,
तो भी हम तैयार हैं,
चुनना पड़ा किसी एक को,
तो बेशक वो हमारा यार है,
चाहा है जबसे उन्हें,
दिल में अजीब सा करार है।।

- धीरज कुमार
निरीक्षक

मन

कभी अपनी ही हंसी पर आता है गुस्सा,
कभी सारे जग हो हंसाने को जी चाहता है।
कभी रोता नहीं मन किसी की मय्यत पर भी,
और कभी यू हीं आसू बहानें को जी चाहता है।
कभी अच्छा लगता है आकाश में आजाद उड़ना,
कभी किसी के बंधन में बंधनें को जी चाहता है।
कभी अपने भी लगते हैं बेगाने से,
और कभी बेगानों को भी अपना बनाने का जी चाहता है।
कभी सारी दुनिया का साथ बहुत भाता है,
कभी खुद को भी भुलाने को जी चाहता है।
कभी मांगता हूं दुनिया की सारी दौलत,
और कभी अपनी भी गंवाने को जी चाहता है।
कभी मांगता हूं नया जीवन,
कभी इसको भी मिटाने को जी चाहता है।
कभी डरता हूं जालिम दुनिया से,
और कभी इस पे छा जाने का जी चाहता है।

धीरज कुमार
निरीक्षक

फूल चाहनेवाले जल से पौधे को सींचते भी है।
- चाणक्य सूत्राणि

जिस नदी का किनारा गिरनेवाला हो, वह त्याज्य होती है।
-संस्कृत लोकोक्ति

इंसान

आज का इंसान कितना मतलबी है,
इसे तो अपनी तसप लगी है,
जब सर्दी में ठण्ड इसे सताए,
तो धूप को यह बुलाए।
और जब गर्मी आए,
तो धूप इसे सताए,
जब धरती सोना उपजाए,
तो आदमी उसे सहराए।
और जब यह धरती कुछ न दे पाए,
तो यह उसे बंधक बनाए,
पहले घर बनाने के लिए,
इसने वृक्ष कटवाए,
जब उनका महत्व जाना,
तो कहे, आओ भाईयों वृक्ष लगाएं।
जब इसे गर्मी सताये,
बादल आने को यह तरसे।
और जब बादल बरसे,
तो यह आदमी उस पर बरसे।
और तो और जब दुःख आए,
तो हर तरफ भगवान ही नजर आए।

और जब सुख आए,
तो भगवान को भी यह भुलाए।।

एक परिचय : श्री शरद सी. मीरानी

(पुत्र श्री सी.पी. मीरानी, अधीक्षक, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, समीक्षा अनुभाग, अहमदाबाद - II)

- उम्र 14 वर्ष

- प्रकाश उच्च माध्यमिक विद्यालय, वस्त्रापुर, अहमदाबाद के कक्षा 10 में पढ़ाई कर रहे हैं।

- 14-22 सितम्बर, 2009 के दौरान ताईपेई, ताईवान में आयोजित अंतरराष्ट्रीय भू-विज्ञान ओलम्पियाड (आईईएसओ), 2009 में कांस्य पदक प्राप्त किया। साथ ही, क्षेत्रीय प्रतियोगिता - अंतरराष्ट्रीय फील्ड ट्रिप इन्वेस्टिगेशन - (आईटीएफआई) में आईटीएफआई सर्वोत्तम प्रस्तुतीकरण दल पुरस्कार।

घटनाओं का इतिहास

- 23.11.2008 को भौतिक विज्ञान शिक्षकों के भारतीय संगठन द्वारा आयोजित एनएसईजेएस (माध्यमिक विज्ञान की राष्ट्रीय स्तर परीक्षा) में भाग लिया एवं सम्पूर्ण भारतवर्ष से भाग लेने वाले करीबन 1200 छात्रों में से सर्वोत्तम 300 में चुना गया।

- दूसरे चरण में फिर से भाग लिया अर्थात् आईएनजेएसओ (भारतीय नागरिक माध्यमिक विज्ञान ओलम्पियाड) एवं सर्वोत्तम 32 में चुना गया।

- 32 को एचबीसीएसई (होमी भाभा सेन्टर फॉर साइंस एजुकेशन) में अभिमुखीकरण तथा चयन कैम्प (ओसीएससी) हेतु बुलाया गया एवं भारत का प्रतिनिधित्व करनेवाले अंतिम 6 में चयन तो नहीं हो सका पर एक अदभुत अनुभव रहा था।

- सभी 32 प्रतिभागियों को जियोलॉजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया, बेंगलुरू में फिर से आईएनईएसओ (भारतीय नागरिक भू-विज्ञान ओलम्पियाड) हेतु बुलाया गया।

- 14-22 सितम्बर के दौरान ताईपेई, ताईवान में आयोजित आईईएसओ (अंतरराष्ट्रीय भू - विज्ञान ओलम्पियाड) में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले 4 लोगों में चुना गया।

- खेल - कूद में भी रोलर स्केटिंग - 30 पदक (राज्य स्तर) एवं 2 पदक (राष्ट्रीय प्रतियोगिता (राष्ट्रीय स्कूल खेल - कूद एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड स्कूल खेल - कूद) में प्राप्त किए गए।

2009 Third International Earth Science Olympiad

ITFI Best Presentation Team

is hereby granted to

Sharad Chandrakant Mirani

India

for outstanding performance in the

3rd International Earth Science Olympiad

21 September 2009, Taipei, Taiwan

Prof. Moo Young Song, Ph.D.
Chair of IESO
Coordinating Committee

Prof. Chun-Yen Chang, Ph.D.
Chair of IESO 2009
Local Organizing Committee

2009 Third International Earth Science Olympiad

Bronze Medal Award

is hereby granted to

Sharad Chandrakant Mirani

India

for outstanding performance in the

3rd International Earth Science Olympiad

21 September 2009, Taipei, Taiwan

Prof. Moo Young Song, Ph.D.
Chair of IESO
Coordinating Committee

Prof. Chun-Yen Chang, Ph.D.
Chair of IESO 2009
Local Organizing Committee

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, अहमदाबाद - II

हिन्दी दिवस / सप्ताह का आयोजन - वर्ष 2011

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, नई दिल्ली के दिनांक 21.04.1987 का कार्यालय ज्ञापन संख्या 1/14034/2/87 - राजभाषा (क - 1) के अनुसरण में पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी हिन्दी सप्ताह - 2011 के अवसर पर इस आयुक्तालय में दिनांक 12.09.2011 से 19.09.2011 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया गया।

2. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए:

(क) कार्यालय में सारा काम हिन्दी में करने का प्रयास किया गया।

(ख) हिन्दी सप्ताह के दौरान सभी कार्यालयों में हिन्दी के प्रचार संबंधी पताकाएं, बैनर आदि प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित किए गए।

(ग) इस दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया:

(1) हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता

(2) हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

(3) हिन्दी श्रुतलेखन प्रतियोगिता

(4) हिन्दी काव्य पाठ प्रतियोगिता

3. उपर्युक्त प्रत्येक प्रतियोगिता में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करनेवाले सफल प्रतियोगियों को क्रमशः रू. 2000/- रू. 1500/-, रू.1250/- और दो सांत्वना रू. 1000/- की दर से नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

4. उपर्युक्त प्रतियोगिताओं में सफल प्रतियोगियों के नाम इस प्रकार हैं :

हिन्दी टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पदनाम-सर्वश्री	स्थान	राशि(रू.)
1.	जयेश आर. छींकनीवाला, अधीक्षक	प्रथम	2000 = 00
2.	लोकेन्द्र प्रताप सिंह गंगवार, निरीक्षक	द्वितीय	1500 = 00
3.	विकास कुमार गुप्ता, कर सहायक	तृतीय	1250 = 00
4.	मनोजकुमार सिंह, निरीक्षक	सांत्वना - I	1000 = 00
5.	रवि शंकर, कर सहायक	सांत्वना - II	1000 = 00

हिन्दी श्रुतलेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पदनाम-सर्वश्री	स्थान	राशि(रू.)
1.	विकास कुमार गुप्ता, कर सहायक	प्रथम	2000 = 00
2.	जयेश आर. छींकनीवाला, अधीक्षक	द्वितीय	1500 = 00
3.	मनोज कुमार सिंह, निरीक्षक	तृतीय	1250 = 00
4.	स्वर्ण कमल गर्ग, कर सहायक	सांत्वना - I	1000 = 00
5.	श्याम सुंदर, निरीक्षक	सांत्वना - II	1000 = 00

हिन्दी निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पदनाम-सर्वश्री	स्थान	राशि(रू.)
1.	जयेश आर. छींकनीवाला, अधीक्षक	प्रथम	2000 = 00
2.	विकास कुमार गुप्ता, कर सहायक	द्वितीय	1500 = 00
3.	मनोज कुमार सिंह, निरीक्षक	तृतीय	1250 = 00
4.	श्याम सुंदर, निरीक्षक	सांत्वना - I	1000 = 00
5.	राम निवास मीना, निरीक्षक	सांत्वना - II (क)	1000 = 00
6.	स्वर्ण कमल गर्ग, कर सहायक	सांत्वना - II (ख)	1000 = 00

हिन्दी काव्य - पाठ प्रतियोगिता

क्र.सं.	अधिकारी/कर्मचारी का नाम एवं पदनाम-सर्वश्री	स्थान	राशि(रू.)
1.	एन.एन. पठान, सिपाही	प्रथम	2000 = 00
2.	श्याम सुंदर, निरीक्षक	द्वितीय	1500 = 00
3.	विकास कुमार गुप्ता, कर सहायक	तृतीय	1250 = 00
4.	लोकेन्द्र प्रताप सिंह गंगवार, निरीक्षक	सांत्वना - I	1000 = 00
5.	मनोज कुमार सिंह, निरीक्षक	सांत्वना - II	1000 = 00

आयुक्तालय द्वारा पुरस्कृत रचनाये

(क) लोकपाल बिल कैसा होना चाहिए ?

परिचय :

पिछले दिनों श्री अन्ना हजारे समाचार माध्यमों में छाए रहे। वजह थी उनका लोकपाल बिल के लिए जन आन्दोलन। श्री हजारे ने मुहिम छेड़ी है कि एक मजबूत लोकपाल बिल संसद में पारित करवाना है। अपने विरोध प्रदर्शन के अंतर्गत उन्होंने अनशन भी किया।

क्या है लोकपाल बिल ?

लोकपाल बिल एक ऐसा विधेयक है जो संसद में कानून बनने के लिए जा रहा है। लोकपाल विधेयक में अन्य प्रावधानों के साथ मुख्य प्रावधान है, भ्रष्टाचार के खिलाफ एक ठोस और मजबूत प्रावधान।

क्या है लोकपाल ?

लोकपाल एक संस्कृत शब्द है जिसे ombudsman या सतर्कता अधिकारी भी कहा जा सकता है। लोकपाल एक संस्था के स्वरूप में काम करेगा और उसका विधिवत अस्तित्व होगा लोकपाल का अहम् कार्य होगा - आम जनता की जरूरतों के सरकार संबंधी कामों में सरलता और भ्रष्टाचार का उन्मूलन। यह एक रक्षक के तौर पर काम करेगा।

लोकपाल का जन्म और इतिहास:

सन 1968 में श्री मोरारजी देसाई कि अध्यक्षता वाले प्रशाशनिक सुधार आयोग नें लोकपाल कि नियुक्ति का सुझाव दिया था। उन्होंने दो स्तर वाले तंत्र का सुझाव दिया था जिसमें केंद्रीय स्तर पर लोकपाल और राज्य स्तर पर लोकपाल की नियुक्ति की बात कही थी। सन 1968 में लोकपाल और लोकायुक्त विधेयक संसद में प्रस्तुत किया गया था पर वह कानून नहीं बन सका।

सन 2006 में भी यह विधेयक प्रस्तुत हुआ था पर कोई करवाई नहीं हुई।

यह एक मात्र विधेयक है जो 1968 में पेश होने के बाद समय - समय पर संसद में प्रस्तुत होता रहा पर 43 वर्ष बाद भी वह कानून में तब्दील नहीं हुआ।

लोकपाल के लिए आन्दोलन :

श्री अन्ना हजारे - श्री किसन बाबूराव हजारे ने लोकपाल बिल के लिए आन्दोलन करने की मुहिम जनवरी 2011 से छेड़ी थी। सरकार द्वारा प्रस्तुत बिल के मसौदे में और टीम अन्ना द्वारा बनाये गए मसौदे में मतभेद होने की वजह से दोनों पक्षों में कोई समाधान नहीं हो रहा था।

दि.16.08.2011 से 27.08.2011 तक अन्नाजी नें अनशन किया और सरकार को राजी कर लिया कि संसद में पेश होने वाले बिल में टीम अन्ना द्वारा सूचित सुधारो पर भी गौर फरमाया जायेगा। उनकी बेदाग छवि के कारण देश के सभी लोग उनसे प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ गए और एक असाधारण बल प्राप्त हुआ।

लोकपाल बिल की जरूरत क्यों ?

भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए हमारे देश में कानून और व्यवस्था पहले से ही उपलब्ध है शान्तनम श्री एन. विठल ने संभाला तब से वह चर्चा में है।

हमारे देश में केंद्रीय सतर्कता आयोग (cvc), केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई), राज्य के सतर्कता विभाग, और अन्य विभागीय सतर्कता विभाग भ्रष्टाचार निरोध का काम करने वाली संस्थाए है इन सभी संस्थाओ में आपसी तालमेल की कमी है वे स्वतंत्र तरीके से काम नहीं कर सकती और राजनीति से ग्रस्त है और वे सिर्फ सलाह देनेवाली संस्थाए बना दी गई है।

इन संस्थाओ द्वारा चलाये गए मामलो में कदाचित दोषी को सजा मिलती है। ऐसी बिन - उत्पादन संस्थाओ को बंद करके उनका खर्च बचाया जा सकता है और उनको लोकपाल में विलीन कर के एक मजबूत भ्रष्टाचार निरोध संस्था का निर्माण किया जा सकता है।

लोकपाल विधेयक कैसा होना चाहिए ?

लोकपाल विधेयक आम आदमी कि सबसे ज्यादा मदद कर सके ऐसा होना चाहिए यह विधेयक उतना असरदार होना चाहिए कि लोगो को कानून व्यवस्था पर विश्वास बनाये रखने में सक्षम हो। यह एक जनलोकपाल बिल होना चाहिए।

लोकपाल की रचना :

लोकपाल कार्यालय में अध्यक्ष और दस से बारह सदस्य होने चाहिए। अध्यक्ष और सदस्य समाज के सभी तबकों का अनुभव प्राप्त, सामाजिक रीति-नीति के ज्ञाता और देश कि आर्थिक परिस्थितियों और विषमताओ से वाकिफ होने चाहिए।

लोकपाल अपने कार्यालय के उचित समझे इतने कर्मचारी गण रख सकेगा। इन्हे आर्थिक और प्रशाशनिक संख्या में होनी चाहिए ताकि वह संस्था/कार्यालय निष्पक्ष हो के पारदर्शी तरीके से काम कर सके। स्वतंत्र होने की वजह से यह राजनेता और नौकरशाह के दबाव में आये बिना काम कर सकती है।

लोकपाल सदस्यों का चयन :

लोकपाल के सदस्यों का चयन बहुत पारदर्शी तरीके से होना चाहिए। सदस्य की लघुत्तम शैक्षणिक योग्यता के उपरांत वह समाज के सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व करने वाला होना चाहिए। बेदाग समजा - सेवक, बेदाग सेवानिवृत्त न्यायाधीश, बेदाग उद्योगकर और सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी (आई ए एस) में से सदस्य चुने जा सकते है।

सदस्यों के लिए समाज के विभिन्न वर्गों से राय ली जानी चाहिए और उनका पिछला इतिहास देखकर ही उन्हें सदस्य चुनना चाहिए।

लोकपाल की कार्यपद्धति :

लोकपाल की कार्यपद्धति निष्पक्ष और पारदर्शी रहेगी। केंद्र स्तर पर लोकपाल एवं राज्य स्तर पर लोकायुक्त की नियुक्ति की जाएगी।

(1) भ्रष्टाचार के मामले में कोई भी व्यक्ति लोकपाल / लोकयुक्त से शिकायत कर सकेगा।

(2) भ्रष्टाचार के मामले कि जाँच एक वर्ष के भीतर पूरी करनी होगी।

(3) लोकपाल के पास दोषी को सजा / दंड देने की या विभागीय कार्यवाही करने की सत्ता होगी।

(4) दोषी को हक रहेगा कि वह लोकपाल के निर्णय के खिलाफ अदालत में अपील कर सके। उस के लिए अतिरिक्त अदालतों का निर्माण करने का प्रावधान किया जायेगा।

(5) लोकपाल के आदेश न मानने पर दोषी पर अवमानना कि कार्यवाही की जा सकेगी।

(6) दोषी के एक वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक कि सजा का प्रावधान होगा।

(7) अदालत में दाखिल मामलो की भी एक वर्ष के भीतर ही सुनवाई होगी और अंतिम निर्णय होगा।

(8) दोषी पाये जाने पर नौकरशाह को नौकरी से हटाने का प्रावधान होगा।

(9) भष्ट तरीको से प्राप्त धन - दौलत की कुर्की/जब्ती करने का अधिकार लोकपाल के पास होगा।

(10) लोकपाल की सभी कारवाही पारदर्शी होगी और सभी रिकॉर्ड प्रकाशित किए जायेंगे।

(11) मामलो का ब्यौरा और निपटान वेबसाइट पर प्रकाशित किया जायेगा।

लोकपाल का अधिकार क्षेत्र :

लोकपाल का अधिकार क्षेत्र विशाल रहेगा।

लोकपाल के दायरे में प्रधानमंत्री, मंत्री, नेता, नौकरशाह, सांसद, NGO, न्याय तंत्र होने चाहिए लोकपाल के दायरे में सभी लोगो को सम्मिलित करने से मजबूत तंत्र कि रचना में फायदा होगा।

संकलन:

लोकपाल विधेयक एक मजबूत कानून बनने के बाद भी यह गारंटी नहीं देगा कि भ्रष्टाचार मूल से खत्म हो जायेगा पर भ्रष्टाचार काफी हद तक खत्म हो सकता है। भ्रष्टाचार को हमारे खून से हटाने की जरूरत है।

हमें लोकपाल बिल की जरूरत क्यों है ? जब भ्रष्टाचार व्याप्त है तब। हमें ऐसा देश चाहिए जहाँ लोकपाल बिल कि जरूरत ही नहीं हो।

उसके लिए हमें जागना होगा..... झुकना होगा.....

..... वह सुबह कभी तो आयेगी।.....

जयहिंद

श्री जयेश आर छींकनीवाला

अधीक्षक

(ख) क्या सरकारी कार्यालयों में हिन्दी में कामकाज हो रहा है ?

उपरोक्त प्रश्नवाचक पंक्ति विचारणीय है क्योंकि इसका उत्तर दो टूक में देना सरल नहीं है, बल्कि तर्क - वितर्क करने की आवश्यकता है। आजादी के 64 वर्ष बाद भी इस भूमण्डलीकरण के दौर में आज भी हिन्दी अपनी प्रतिष्ठा कायम करने के लिए जद्दोजहद कर रही है। आज भी हिन्दी अपनी मुकाम को तरसती है आइए निम्नलिखित पंक्तियों पर गौर करें

"पराधीन देश की मैं परिभाषा,
पर पूछ रही हूँ जन - जन से
वर्तमान में मैं किस हिन्दुस्तानी की हूँ अभिलाषा
मैं इस देश की राजभाषा"

ये पंक्तियाँ हिन्दी के प्रति हमारी उदासीनता को स्पष्ट रूप से बिम्बित करती है। आज की पीढी अंग्रेजी को बतौर फैशन के रूप में इस्तेमाल करती है। "राष्ट्रपति भवन के बजाय प्रेसिडेंट हाउस," संसद भवन के बजाय पालियमिंट बोलना पसंद करती है।

अपने विभाग की बात की जाय अगर किसी कर्मचारी/अधिकारी को उनका वर्तमान पदस्थापना पूछी जाये तो उनका उत्तर - ऑडिट, प्रिवेंटिव, रेंज, लीगल, ओफेन्स एवं अपील, डिवीजन, हेडक्वार्टर इत्यादि होता है एवं उनका परिचय भी इंसपेक्टर, सुपरिन्टेन्डेंट होता है।

वर्ष में एक बार यानि 14 सितम्बर को हिन्दी को आदरपूर्वक याद किया जाता है, दिखावे के लिए ही सही उसे रानी बना दिया जाता है। हैरानी की बात तो यह है कि हिन्दी दिवस भी अब त्योहार की भाँति मनाया जाता है, क्योंकि 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को सर्वसम्मति से राजभाषा बनाने का फैसला लिया गया था।

अनुच्छेद 343 'क' के अनुसार भारत की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। अनुच्छेद 340 क एवं 351 के अनुसार भारत में 22 भाषायें हैं, अगर हिन्दी को राष्ट्रभाषा बना दिया जाता है तो अन्य भाषाओं को दोलन भाषा का दर्जा देना पड़ता है।

"भारत एक राष्ट्र है उसके पास अपना
राष्ट्रध्वज है, राष्ट्रगान है, राष्ट्रप्रतीक है,
नहीं है तो सिर्फ राष्ट्रभाषा क्यों ?"

हिन्दी के प्रोत्साहन तथा विकास के लिए कई कदम उठाये गये है जैसे कि-

(1) सन् 1967 में केन्द्रीय समिति का गठन हुआ जो प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में है इसके अनुसार सरकारी कार्यालयों, विभागों तथा मंत्रालय आदि में हिन्दी की प्रगति पर समीक्षा की जाती है। इसके अलावा यह हिन्दी के प्रयोग में होनेवाली कठिनाईयों को दूर करने के लिए प्रशिक्षण का भी क्रियान्वयन करती है।

(2) सन् 1976 में राजभाषा अधिनियम बनाया गया जिसके अनुसार भारत के कुछ राज्य जैसे - उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखंड, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, अंडमान निकोबार की राजकीय भाषा हिन्दी होगी तथा ये सभी

केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, प्रक्रिया तथा संहिता, हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों में करेंगे।

(3) पुरस्कार : हिन्दी को सरकारी कार्यालयों में बढ़ावा देने के लिए कई पुरस्कार वितरित किए जाते है जिसमें इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार वर्णनीय है, यह पुरस्कार सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, विभागों में प्रदान की जाती है।

(4) हिंदी कार्यशाला का आयोजन : इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी के देवनागरी में प्रयोग के औचित्य को समझना है।

(5) प्रतियोगिता का आयोजन इत्यादि : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह कहा जा सकता है कि हिंदी का प्रयोग हो रहा है जैसे सरकारी कार्यालयों, मंत्रालयों, विभागों, सार्वजानिक संस्था वित्तीय संस्था इत्यादि में "सामान्य आदेश, संकल्प, प्रेस विज्ञप्तियाँ, अनुसूचानाये, नियम, टेंडर नोटिस, टेंडर फोर्म, सविंदा करार, सरकारी कागजात द्विभाषी रूप में जारी किया जाता है।"

हिंदी टिप्पण, पत्राचार, मसौदा, हस्ताक्षर हिंदी में होने लगे हैं जो कि शुभ संकेत है लेकिन यहाँ एक प्रश्न उभरता है कि किस स्तर तक हिंदी में काम काज हो रहा है आंकड़े और हकीकत में फर्क है।

राजभाषा के नियम अनुसार हिंदी क्षेत्र में अवस्थित सरकारी कार्यालय का नाम पता इत्यादि हिंदी में होगा लेकिन अन्य क्षेत्र में त्रिभाषी में होगा अतः साफ है कि अंग्रेजी विद्यमान रहेगी।

वैसे तो भारत में अधिकृत रूप से हिंदी राष्ट्रभाषा है। पर अंग्रेजी राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतीत होती है आज अंग्रेजी रोजगार की गारंटी तथा योग्यता का प्रमाण बन चुका है। समाज में प्रतिष्ठा का प्रतीक बन चुका है शिक्षा सुधारक लार्ड मैकाले की मानसिकता थी कि भारतीय मानसिक रूप से अंग्रेज ही रहे और इसमें कामयाब भी रहे।

यहाँ निम्न पंक्तियाँ बेहतर रूप से प्रकाश डालेंगी.....

"चले गये गोरांग देश पर गारांगी छोड गये अंग्रेजी गोरांगी के
चक्कर में भारत को मोड गये मैं अंग्रेजी शिविर की बंदिनी
अपने ही घर में एक दुराशा मैं इस देश की राजभाषा"

ये पंक्तियाँ भारत की विडबंना को स्पष्ट करती है। जब भारत पराधीन था तो हिन्दी का क्रमिक विकास होता रहा परन्तु स्वाधीनता के बाद इसके विकास में ठहराव आ गया। बाजारवाद उपभोक्तावाद ने हिन्दी पर असर डाला है। कम्प्यूटर युग में हिन्दी का प्रचार कम हुआ है। आज एस. एम. एस. चैटिंग, अंग्रेजी में होती है। कोई भी संस्था अदालत, शैक्षणिक संस्थान अंग्रेजी को तवज्जों देती है। अदालत का आदेश अंग्रेजी में पास होता है। चिकित्सक दवा अंग्रेजी में लिखते है। भारतीय सिनेमा भारत की संस्कृति में है, में भी हिन्दी का समावेश हो रहा है।

"भाषा हिन्दी किसकी है नहीं है भाषा मम्मी और डैडी नहीं है, भाषा बर्गर हेम बर्गर नहीं है, भाषा आंटी और अंकल नहीं है, भाषा प्लीज और एक्सयूज भी नहीं है, भाषा है हिन्दी एकता और बलिदान, एकता और स्वाभिमान की।"

आइए हम अपना योगदान हिन्दी के विकास में टिप्पणी मसौदा, आवती, पावती प्रविष्टियाँ हिन्दी में करना प्रारंभ करें तभी सच्चे अर्थों में यह कहा जाएगा कि हिन्दी का प्रयोग सरकारी कार्यालय में हो रहा है।

जय हिन्द

श्री मनोज कुमार सिंह
निरीक्षक

आसमां का ख्वाब

रहो जमीं पे, मगर आसमां का ख्वाब रखो,
तुम अपनी सोच को हर वक्त लाजवाब रखो।

खड़े न हो सको इतना न सर झुकाओ कभी,
तुम अपने हाथ में किरदार की किताब रखो।

उभर रहा जो सूरज, तो धूप निकलेगी
उजालों में रहो, मत धुंध का हिसाब रखो।

मिलों तो ऐसे कि कोई न भूल पाये तुम्हें
महक वफा की रखो और बेहिसाब रखो।

अक्लमंदों में रहो तो अक्लमंदों की तरह
और नादानों में रहना हो रहो नादान से।

वो जो कल था और अपना भी नहीं था दोस्तों
आज को लेकिन सजा लो एक नयी पहचान से रहो जमीं पे,
मगर आसमां का ख्वाब रखो,
तुम अपनी सोच को हर वक्त लाजवाब रखो.....

वेद प्रकाश गुप्ता
निरीक्षक

सहर आई है

या खुदा आज बला, कैसे सहर आई है।

रोशनी सारी मेरे दर पे चली आई है।

जिसको मुमकिन नहीं था, ख्वाब में देख सकूं

चांद की हर किरन बेपर्दा चली आई है।

आसमां आ गया है आज जमीं से मिलने

इश्क ने हुस्न के दिल में जगह बनाई है।

लग रहा है मुझे जन्नत ही मिलेगी 'वेद'

मुझको पहुँचाने कब्र तक तो वो दूर आई है।

वेद प्रकाश गुप्ता
निरीक्षक

.... तो चले जाना

एक जाम तुझे होठों से पिला लूं तो चले जाना
एक मुद्दत से प्यासा हूँ मैं तेरी चाहत का
तुझ को एक बार सीने से लगा लूं तो चले जाना
तुम मुझ को ही चाहो और दुनिया भुला दो
जादू यह इश्क का चला लूँ तो चले जाना
तुम को दिल में बसा कर लिखी है यह "गजल"
धीरे से उसको गुन - गुना लूं तो चले जाना.....

वेदप्रकाश गुप्ता
निरीक्षक

हाल-ए-दिल अपना सुना लूं तो चले जाना
तुमको हमराज बना लूं तो चले जाना
कब तलक छुपाउंगा अपनी उल्फत
तुमसे इकरार-ए-मोहब्बत जो कर लूं तो चले जाना
शर्म-ओ-हया से रूख पर जैसे बिखरी जुल्फें
उनको रूख पर मैं सजा लूं तो चले जाना
तेरे हुस्न पर फिदा है यहाँ दीवाने कई
तुम को नजरों मैं छुपा लूं तो चले जाना
जैसे बहुत पीये तेरी कातिल नजरों से मैंने

जी लो जी भर के

जब एक तारा टूटे है,
वो आसमां
वो चांद,
ना चीखे, ना चिल्लाये,
ना कभी रूठे है।
जब एक फूल गिरे
या पत्ता एक टूट जाता है
न बगिया
न माली, ना रहबर
ना चीखे ना चिल्लाता है।
एक लहर अगर आ जाती है
दूजी आकर जगह पा जाती है
ना साहिल रोये
ना नैया डोले
ना चेहरे पर उदासी
सागर के कभी आती है
तुम भी जाओगे,
हम भी जायेंगे,
वो लोग मिलेंगे
स्वागत करते औरो का
फिर - फिर के स्वागत थाल सजायेंगे।
अकेले आये हो
अकेले जाओगे
आस जमाने की
साथ निभाने की
छोड़ दे
छोड़ दे, इससे पहले की
दुनिया तुझे छोड़ दे ।।

वेदप्रकाश गुप्ता 'वेद'
निरीक्षक

वनीकरण एवं वन्य जीवन संरक्षण

काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी (उत्तर दक्षिण) तथा कच्छ (सौराष्ट्र) से लेकर पश्चिम बंगाल (पश्चिम-पूरब) की ओर फैले हुए भारत देश में एक समय काफी विशाल घने जंगल थे। हिमालय जैसा महाकाय पर्वत, उसके पर्वत श्रृंखला से व्यापक पर्वत है। इन जंगलों की बदौलत मानव जीवन सुखकर था। आदमी तथा वन्य जीवन सुरक्षित थे।

क्या आज वन्य जीवन और आदमी सुखकर है ? सच पूछो तो इसका जवाब "हाँ" में देना आसान नहीं है। जंगल वन्य जीवन पशु - पक्षियों का सुरक्षित स्थान है। जंगल का इस्तेमाल मानव की पूरी जिंदगी सुधारता है। क्या उसका रखरखाव और संवर्धन हमारी जिम्मेदारी नहीं है ?.....

भारतवर्ष में पाए जानेवाले वन्य प्राणियों की तादाद दिन ब दिन घटती जा रही है। इसके लिए जिम्मेवार कौन है ? वन विभाग जंगल के रखरखाव के लिए जिम्मेवार नहीं है क्या ? हिंस्य श्वापद (बाघ, सिंह) तथा अन्य वन्य प्राणी चिंकारा, हाथी, हिरण, खरगोश आदि का शिकार खुले आम होते हुए दिखता है। इसका प्रमाण उनकी खाल बाज़ार में बेची जाती है। कभी - कभार लोग सामान के साथ पकड़े भी जाते हैं। आगे क्या होता है, सभी जानते हैं। मोटे - मोटे शिकारियों से खुदरा व्यापारी वन्य जीवों की खाल, दंत खरीदकर बड़े व्यापारियों को ऊँचे दामों पर बेचते हैं। यह विश्वभर में फैला हुआ बड़ा नेटवर्क है, जिसके लिए "Wild Animal Act" आज की तारीख में कम पड़ता है। इसमें मृत्युदंड जैसी कड़क (कठोर) सज़ा का होना निहायत ज़रूरी है।

चूहा खेत में फ़सल की बरबादी करता है। वहां निसर्ग ने साँप को चूहों की तादाद कम करने के लिए पैदा किया है। निसर्ग स्वयं नियंत्रण में जुटा है। संतुलन रखने की कोशिश करता है। जब कभी वन्य प्राणियों की शांति भंग हो जाती है, वृक्ष तोड़ से वन्य प्राणी प्रायः हिंसक प्राणी अर्थात् बाघ आदि मनुष्य बस्ती में आ जाते हैं। समाज का एक अंग गलती करता है। सज़ा तो सभी को भुगतनी पड़ती है। इसलिए हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि निसर्ग का संतुलन बनाए रखें।

वन्य जीवों के साथ मोर, तोता, कबूतर आदि पक्षियों का हाल भी बेहाल है। नाम के लिए कागज़ पर "बाघ" राष्ट्रीय प्राणी और मोर राष्ट्रीय पक्षी हैं। जंगलों को 'सुरक्षित क्षेत्र/वर्जित क्षेत्र' घोषित करने पर भी समाज में उपद्रवी लोग अपनी हरकतों से कहाँ बाज़ आते हैं ? इसके लिए न्याय व्यवस्था में तेज़ी लानें की ज़रूरत है। जंगल और पुलिस अधिकारियों को मज़बूत करने की ज़रूरत है। स्वायत्तत्ता का विचार हो सकता है। जंगल तोड़, वन्य प्राणी शिकारी तथा दलाल, माफिया तथा उग्रवादियों का समय रहते बंदोबस्त होना निहायत ज़रूरी है। सरकारी प्रयासों के साथ जन सामान्य की सजगता, सतर्कता तथा भागीदारी आवश्यक है।

जंगलों को काटकर ज़मीन से संपादन करनेवाले आखिर में क्या पाना चाहते हैं ? जंगल में पेड़ों की कमी के कारण पेड़ों का फ़िसलना, पर्वत श्रृँखला में बदलाव, बारिश की मात्रा का घटना, जल संपदा की मात्रा का घटना जीवन पर बुरा असर डाल रहे हैं। सरकार के प्रयास "जनजागृति" एवं वृक्षों की पैदावार, संवर्द्धन और रखरखाव में जन सामान्य की भागीदारी बढ़नी चाहिए। हरियाली ही सुख संपन्नता लाएगी। खेती में हरियाली बढ़नी चाहिए। अनाज की उपज बढ़नी चाहिए और रखरखाव की व्यवस्था भी सही होनी। "हरित क्राति" देश को उन्नति के पायदान पर ले जाएगी और सुख संपन्न सुजलाम सुफलाम बनाएगी।

"जयहिन्द !"

अजीतसिंह ए. भोंसले
सहायक आयुक्त

ये बेचारा, काम के बोझ का मारा

सुबह को उठा, भागा, दौड़ा,
कहाँ जाना है, कुछ पता नहीं।
कुछ पाना है, ज़्यादा खोना है,
जब कि उसकी कोई खता नहीं ।।

काम पर आया, कुछ देर से आया,
शर्म के मारे, मुँह उठा नहीं पाया।
कुछ डाँट पड़ी, कुछ गम बढ़ा,
फिर भी वो हार नहीं गया ।।

साथियों ने देखा, मूंछों मे हँसा, पूछा -
"कोई तकलीफ ? या खाना नहीं खाया ?"
शर्म छोड़ो, दिल न तोड़ो, ये ऑफिस है,
खाओ, पियो और आराम करो ।।

पर नहीं..... ! इसे अभी आराम कहाँ ?
कितनी फाइलें निपटानी है,
इसमें इसे चैन कहाँ ?

ये करूँ कि वो करूँ, छोटी फाइल पकडूँ कि बड़ी ?
सोचता हुआ वो आगे बढ़ा, वहाँ उसका पैर फिसला,
था वो गभरू, थोड़ा डरपोक,
लगाई उसने प्राणपोक ।।

न घर को देखा, न बीवी को घुमाया,
न ही बच्चों से वो खेला,
रिपोर्टों से भारी फाइल कुतरने के चक्कर में,
अपने प्राण वो गँवा चला।।

अरे भाई ! वह चूहा था, जो शहीद हुआ।
न कि हम, जो अभी ज़िंदा हैं।।

मोनल दवे
निरीक्षक

आयुक्तालय में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया । इस अवसर पर व्याख्यान देते हुए संकाय सदस्य । समाप्ति पर तत्कालीन आयुक्त (अब मुख्य आयुक्त) महोदय श्री एच. के. जैन, तत्कालीन अपर आयुक्त महोदय श्री विजय रिशी एवं तत्कालीन संयुक्त आयुक्त (अब अपर आयुक्त) महोदय श्री अमरजीत सिंह, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, अहमदाबाद - II के कर कमलों से प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। कुछ झलकियाँ।

हिन्दी कार्यशाला झलकियाँ ।

हिन्दी कार्यशाला झलकियाँ ।

हिन्दी कार्यशाला झलकियाँ ।

हिन्दी कार्यशाला झलकियाँ ।

हिन्दी कार्यशाला झलकियाँ ।

केन्द्रीय राजस्व खेल बोर्ड द्वारा आयोजित क्षेत्रीय खेल स्पर्धा - 2012 (पश्चिम क्षेत्र) की झलकियाँ

केन्द्रीय राजस्व खेल बोर्ड द्वारा आयोजित क्षेत्रीय खेल स्पर्धा - 2012 (पश्चिम क्षेत्र) की झलकियाँ

शेज़ार और शेज़ार धर्म

विश्व निर्माण के बाद पृथ्वीतल पर प्राणी, मानव, पशु, पक्षी, कीट आदि जीव - जीवाणु पैदा हुए। 'पानी' जीवन का मूल आधार है। पानी की जहाँ सहजता से उपलब्धि थी, खाने - पीने का इंतज़ाम जहाँ सहजता से था, वहाँ प्राणी, पक्षी, मानव का वास जारी रहा। हिंसक प्राणियों से बचने के लिए जंगल में लोग पेड़ पर घर बनाकर रहने लगे। अन्य गुट तथा चोरी करनेवाले तथा हल्ला करनेवाले प्राणी, मनुष्यगणों से बचने के लिए समूह बनाकर रहना चालू रहा। मानव तथा प्राणी मात्र अन्य सजातीय या ताकतवर प्राणियों से बचने के लिए समुदाय जुटना चालु हो गया। एक दूसरे की पहचान बढ़ी। भाईचारा बढ़ता गया।

जरूरत के मुताबिक लोग वस्तुओं का आदान - प्रदान करने लगे। व्यापार का उद्‌गम हुआ। एक चीज़ के बदले दूसरी ज़रूरी चीज़ एक दूसरे से, नज़दीक की बस्ती से मिलने लगी। अपने नज़दीक (शेज़ार) रहने वाले, नज़दीक की बस्ती, गाँव, शहर, प्राँत, देश में रहने वाले मनुष्यगण एक दूसरे की सहायता करने लगे। भाईचारा बढ़ता गया। कठिन समय (मुसीबतों की घड़ी) पर सहायता के लिए लोग आने लगे। मनुष्य एक समाज प्रिय प्राणी है। जानवरों में भी समुदाय या झुंड से घूमने की आदतें बढ़ती गयीं। सुरक्षा हेतु लोगों का मिलना, समुदाय बनाकर एक दूसरे की मदद करना समय की माँग है, उचित भी है।

समय बीतता गया। लोग प्रगति की राह पर चलने लगे। समाज देव, धर्म के नाम पर की संघी-साधु लोगों के कारण अलग - अलग गुट में बाँटे जाने लगे। राजनीति, धर्मनीति की भ्रष्ट व दुष्ट प्रवृत्तियाँ समाज में निर्माण होकर समय के बीतते बढ़ती गईं। एक दूसरे की प्रगति 'उत्कर्ष' दुश्मनी का रूप लेने लगी। विश्व स्तर पर कई सज्जन लोगों के प्रयासों से मानवता के आधार पर लोग इकट्ठे हुए। सामाजिक संस्थाएँ उभरकर एक दूसरे की मदद के लिए मुसीबतों तथा अच्छे समय पर भी भरसक कोशिश करने लगीं। नज़दीक रहनेवाले कई देश आपसी तालमेल बढ़ाकर साथ - साथ प्रगति की ओर बढ़ने लगे।

आज की स्थिति में दुनिया भर के देशों की नीति का जायजा लिया जाए, तो मानव के नीति मूल्यों का स्तर गिरता हुआ दिखता है। विधातक वृत्तियाँ महाकाय राक्षस का रूप लेती हुई दिखती हैं। यह कटु सत्य है। नकारात्मक दृष्टिकोण तो बिलकुल नहीं है। पड़ोसी - पड़ोसी, धर्म - धर्म, समविचारी, अलग - अलग विचार रखनेवाले, पड़ोसी, राज्य, देश अलग अलग हुए दिखते हैं। सज्जन, समाजप्रिय, हितचिंतक पड़ोसी, देश, राजनीतिज्ञ हमेशा 'मानवता और मानवता धर्म' प्रगति के सभी अच्छे परिणाम मिलने के प्रयास में जुटे हैं। उनके प्रयास सफल होते रहे। विश्व में शांति बनी रहे सारे विश्व के लिए 'प्रयासदान' माँगने वाले संत श्री ज्ञानेश्वर महाराज की तरह विश्व भलाई की इच्छा करें।

पड़ोसी देश सूझ-बूझकर भाईचारा शेज़ार धर्म का पालन करें। बुराई का रास्ता छोड़कर भलाई की ओर बढ़ें। विश्व की महान प्रभुति में से एक भगवान ईशू की तरह "LOVE THY NEIGHBOUR AS THYSELF" की भावना से आगे बढ़े।

आएँ हम सब मिलके
एक अच्छा हिन्दुस्ताँ बनाएँ।
एक अच्छा विश्व बनाएँ।

मानवता और मानवता धर्म, शेज़ार धर्म का पालन अच्छी तरह से करें।

अजित सिंह भोंसले
सहायक आयुक्त

खा पी के खिसको

मुझे दुनिया में रहना है, मुझे यहीं पर जीना है,
इसलिए हर जगह, हर पल, हर मोड़ पे,
सब के साथ भाए न भाए,
पर मुझे इससे क्या ?
मुझे तो बस खा पी के खिसक जाना है।

मुझे मेरा काम निकालना है,
इसलिए हर बात पे हाँ भरनी है।
चाहे वो पसंद हो या नापसंद,
चाहे बात पे मंजूर हो या नामंजूर ।
पर मुझे इससे क्या ?
मुझे तो बस खा पी के खिसक जाना है।

मुझे मेरा मतलब निकालना है,
इसलिए ही तो साथ रहना है,
चाहे भलाई की बात हो या बुराई की,
चाहे बात पे हैरां हूँ या नाराज,
पर मुझे इससे क्या ?
मुझे तो बस खा पी के खिसक जाना है।

मुझे मेरा नियम नहीं, मुझे मेरा आदर्श नहीं,
चाहे वो संसार की अच्छाई की बात हो या जग - कल्याण की,
चाहे परमार्थ की बात हो या जगत के उजियारों की,
पर मुझे इससे क्या ?
मुझे तो बस खा पी के खिसक जाना है।

मुझे मेरा ही कल्याण करना है,
मुझे मेरी ही जिन्दगी उज्जवल करनी है,
चाहे उसके लिए हर रिश्ते - नातों में ही सर्वथा सुख कायम है,
वैसा सोचे बिना,
मुझे तो बस, खा पी के खिसक जाना है।

सुरेश कान्तिलाल श्रीमाली "सूरज"
अधीक्षक

सफर

जीवन की राह पर चलते - चलते
बना एक ऐसा संयोग,
परिचित हुआ एक संगठन,
नाम है जिसका कर्मचारी चयन आयोग,
इसने ली एक परीक्षा
जिसमें लाखों हुए शरीक
परीक्षण था बेहद बारीक
परिणाम की प्रतीक्षा में था में नित
आखिरकार हो ही गया में चयनित
देश की सेवा के लिए
बन गया मैं कर सहायक
इस शपथ के साथ कि
बनना है मुझे कर्त्तव्य-निष्ठा का परिचायक

विकास कुमार गुप्ता
कर सहायक,

समय आए बिना वज्रपात होने पर भी मृत्यु नहीं होती और समय आ जाने पर पुष्प भी प्राण ले लेता है।
- कल्हण

समय पर पहुँचाई गई मदद छोटी या कम होने पर भी इस पृथ्वीलोक से बढ़कर होती है।
- तिरुवल्लुवर

साधना का तात्पर्य ईश्वर को जानना मात्र नहीं है, अपितु स्वयं को ईश्वर बना लेना है।
- शिवानंद

"आइए हिन्दी में काम करें"

सामान्य भविष्य निधि नियमावली
परिशिष्ट "घ" - वर्ग - III

भविष्य निधि से प्रत्याहरण (विद्ड्राअल) के लिए आवेदन का प्रारुप :

1. अंशदाता का नाम :
2. लेखा सांख्य (विभागीय प्रारूप सहित) :
3. पदनाम :
4. वेतन :
5. सेवाग्रहण करने का दिनांक एवं वार्द्धक्य सेवानिवृत्ति (सुपरएन्युएशन) का दिनांक :
6. आवेदन के दिनांक को अंशदाता के नाम जमा रकम नीचे बताए अनुसार है

   (i) वर्ष ..... के विवरण अनुसार राशि शेष

   (ii) मासिक अँशदान के कारण ..... से ..... तक जमा

   (iii) ऊपर बताए ( ) में इतिशेष के बाद निधि में जमा की गई वापसियाँ :

   (iv) ..... से ..... तक की अवधि के दौरान प्रत्याहरण :

   (v) आवेदन के दिनांक को जो शुद्ध शेष :
7. आवेदित प्रत्याहरण की रकम
8. (क) प्रयोजन जिसके लिए प्रत्याहरण की आवश्कता है

   (ख) नियम जिसके
9. क्या इसी प्रयोजन के लिए पहले प्रत्याहरण किया था ? यदि हाँ तो प्रत्याहरण की रकम एवं वर्ष बताएँ
10. भविष्य निधि लेखा रखने वाले अधिकारी का नाम

आवेदक के हस्ताक्षर :
पदनाम :
अनुभाग :

सहायक आयुक्त का कार्यालय, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क

मण्डल - IV, अहमदबाद - II, महावीर जैन विद्यालय, बस स्टेण्ड के सामने पालडी, अहमदाबाद - 380006

फोन न. (079) 26579622 फैक्स नं. (079) 265879622

फा.सं. V 118 - आर / IV / 10 अहमदाबाद दिनांक.....

सेवा में,

अधीक्षक,

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क,

निर्धारण रेंज - IV, चांगोदर,

मण्डल - IV, अहमदाबाद - II,

विषय : मेसर्स .....

द्वारा दाखल प्रतिदाय (रिफंड)/छूट (रीबेट) दावा आवेदन रू.....

एआरआई-1 सं..... दिनांक..... के सम्बन्ध में।

कृपया इसके साथ दिनांक ..... को इस कार्यालय में प्राप्त उक्त उल्लिखित प्रतिदाय (रिफंड)/छूट दावा आवेदन इसके संलग्नकों सहित सत्यापन एवं प्रतिदाय/छूट दावा के कारणों पर विस्तृत टिप्पणियों हेतु इसके साथ प्राप्त करें। यदि उक्त दावा अनुसत्य है तो निम्नलिखित टिप्पणियां प्रतिदाय/छूट बिल के मुख्य भाग पर दी जाएं :-

प्रमाणित है कि:-

(1) उक्त दावा इस पक्षकार द्वारा पहली बार किया गया है।

(2) उक्त दावा मूल शुल्क अदायगी दस्तावेजों से सत्यापित एवं सही पाया गया है।

(3) उक्त दावा काल बाधित नहीं है।

(4) उक्त पक्षकार के प्रति कोई सरकारी बाकाया शेष नहीं है।

सत्यापन सम्बन्धी पृष्ठांकन सम्बन्धित शुल्क अदायगी दस्तावेंजों अर्थात् चालान, बीजक, व्यक्तिगत लेखा खाता, सेनवेट खाता, आदि पर किए गए जायें और "प्रतिदाय/छूट दावा पहली बार किया गया" के रूप में पृष्ठांकन उक्त दावा के सभी कागजातों पर किया जाए/अनुसत्य प्रतिदाय/छूट के भुगतान के ब्यौरे दिखाने वाली जांच सूची तथा कार्य चिट्ठा यथा जांच एवं हस्ताक्षरित तैयार किया जाये और इन्हें दावा कागजातों के साथ भेजा जाए। आपका ध्यान अनुदेश संख्या 121/91 दिनांक 04-10-1991 की ओर से भी आकर्षित किया जाता है। तदनुसार यदि दावा अनुसत्य नहीं है, तो विशिष्ट कारणों का उल्लेख करते हुए रिपोर्ट दी जाए।

यह भी नोट किया जाए कि आगे अब से : प्रतिदाय/छूट दावे स्वयं सत्यापित पोल बिल की निर्यात प्रोत्साहन प्रति उक्त ए.आर.ई.-1 की मूल एवं दूसरी प्रतियां एवं लक्षण/वायुमार्ग बिल/निर्यात बिल/मेट रसीद/बीआरसी आदि की स्वयं सत्यापित प्रति के आधार पर मंजूरी के लिए प्रस्तावित किए जाने चाहिए। आपके क्षेत्राधिकार के अन्तर्गत निर्यातकों को सलाह दी जाए कि अपने सीमा शुल्क अभिकर्ता (सीएचए) को निर्देश दें कि सीमा शुल्क अधिकारियों, निर्यात के बन्दरगाह पर निर्यात पर्यवेक्षकों द्वारा दस्तावेजों पर समुचित रूप से पृष्ठांकन करवाए जाएं। ऐसे मामलों में जहाँ कुछ दस्तावेजों पर समुचित रूप से पृष्ठाकन नहीं किए गए हैं, सम्बन्धित सीमा शुल्क सदन के सहायक आयुक्त (माल सूची निकासी विभाग) से प्रमाणपत्र हेतु छूट दावों की मंजूरी के लिए प्रस्ताव रखने से पूर्व निरंतर जोर देना चाहिए।

उक्त छूट कागजात यथा समीक्षा करके एवं उत्तर उल्लेख किए अनुसार तुरंत ही सम्बन्धित एआरई-1 की तीसरी प्रति के साथ तथा उक्त उल्लिखित दस्तावेजों के साथ सत्यापन रिपोर्ट सहित इस कार्यालय को लौटाया जाए। आगे उक्त छूट की अनुसत्या नेमी एवं यांत्रिक ढंग से न होकर बल्कि व्यापक एवं विशेष होनी चाहिए।

आपसे यह सुनिश्चित करने का अनुरोध है कि:

(I) स्वयं सत्यापन की प्रत्येक रबड-मोहर में प्राधिकृत व्यक्ति का नाम, पदनाम एवं दिनांक होना चाहिए।

(II) प्राधिकार पत्र की प्रति इसके साथ संलग्न है।

(III) निर्यातक द्वारा असम्बन्धित हिस्सा/एआरई-1 के स्तम्भ संख्या 3 एवं 4 पर विषय समुचित रूप से काट दिया जाए।

(IV) फार्म 'सी' जहां आवश्यक होता है वहां समाहर्ता/समाहर्तालय के स्थान पर सहायक आयुक्त/आयुक्तालय का उल्लेख किया गया है।

संलग्न : यथोपरि।

अधीक्षक

केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, मण्डल - IV,

अहमदाबाद - II

सहायक आयुक्त का कार्यालय, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क

मण्डल - IV, अहमदाबाद - II, विद्यालय चेम्बर्स, पालडी, अहमदाबाद - 380006

क्र.सं. ..... अहमदाबाद, दिनांक.....

सेवा में,
अधीक्षक,
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क,
निर्धारण रेंज संख्या..... मण्डल - IV,
अहमदाबाद - II

विषय : मेसर्स ..... के मामले में कारण बताओ सूचना (SCN) तामील करना

इस सम्बन्ध में कृपया इसके साथ सहायक आयुक्त, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, मण्डल - IV, अहमदाबाद - II, द्वारा जारी रू. ..... के लिए मेसर्स .... को सम्बोधित उपर्युक्त कारण बताओ सूचना सं.फा.सं. ..... दिनांक..... उक्त निर्धारती को तामील करने हेतु प्राप्त करें। आपसे अनुरोध है कि इसे सम्बन्धित पक्षकार को सुपुर्द किया जाए। उक्त कारण बताओ सूचना तामीलकर्ता अधिकारी को उनकी उपस्थिति में तामील किए जाने के रूप में पावती सत्यापित करने के लिए निदेश दिए जाएं। उक्त दिनांकित पावती इस कार्यालय को तुरंत अग्रेषित की जाए।

उक्त कारण बताओ सूचना जारी / तामील करने की अंतिम तिथि..... है।

संलग्न : यथोपरि।

अधीक्षक
केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, मण्डल - IV,
अहमदाबाद - II

चुटकुले

1. एक प्रोफेसर साहब भूख को जीवों की सबसे बड़ी जरुरत साबित करने के लिए क्लास में प्रयोग कर रहे थे। इसके लिए उन्होंने एक चूहे के एक तरफ रोटी और दूसरी तरफ चुहिया रखी। फिर जैसे ही चूहे को छोड़ा वह सीधा रोटी की तरफ लपका। दूसरी बार उन्होंने रोटी हटाकर उसकी जगह चावल रखे। इस बार भी चूहा चुहिया की तरफ न जाकर चावलों पर टूट पड़ा। प्रोफेसर ने खाने की कई चीजें बदल-बदल कर चूहे के पास रखी और वो हर बार खाने की चीजों की तरफ लपका। उसने चुहिया की ओर एक बार देखा भी नहीं। इस प्रयोग के बाद प्रोफेसर ने छात्रों को समझाया इससे साबित होता है कि भूख ही सबसे बड़ी जरूरत है। दूसरी जरूरतें उसके आगे कुछ भी नहीं.... छात्रों के बीच में से एक आवाज आई सर जी एक बार चुहिया भी बदल कर देख लेते।

2. तीन आदमी मौत के बाद नर्क के दरवाजे पर मिले उनमें से सिर्फ एक ही स्वर्ग जा सकता था, इस पर दरबान ने तीनों को 10 मिनट का समय दिया और कहा कि कोई अनोखी चीज जो बनायेगा वही स्वर्ग जायेगा। सभी काम पर लग गये पर जो भारतीय था वो सो गया। पाकिस्तानी ने एक बंदूक बनाई तो चीनी ने एक मोबाईल बनाया। ठीक 10 मिनट के बाद भारतीय उठा उसने एक कागज पर मेड इन इंडिया लिखा और दोनो पर चिपका दिया। इस तरह से वह स्वर्ग चला गया।

3. एक आदमी लायब्रेरीमें गया। एक उपन्यास लेकर लायब्रेरीमें कोने में बैठकर दिनभर पढ़ता रहा। जब किताब पढना खत्म हुआ तब लाइब्रेरियन के सामने किताब पटकते हुए सरदाजीने कहा - "यह क्या बकवास उपन्यास रखते हो लायब्रेरीमें। इसमें इतने ढ़ेर सारे केरेक्टर हैं और कहानी का कुछ अता-पता ही नहीं।" लायब्रेरीयनने किताब की तरफ देखकर कहां "अच्छा तो जनाब आपके पास थी यह किताब..... तभी मै बोलू ईतनी देरसे टेलिफोन डिरेक्टरी कहां गुम हो गई है।"

4. शराबी पति पीकर घर आया तो पत्नी की डांट से बचने के लिए एक किताब खोलकर पढ़ने का नाटक करने लगा।

   पत्नी : आज फिर पीकर आये हो।

   पति : न... नहीं तो !

   पत्नी : तो फिर ये सूटकेस खोलकर क्या कर रहे हो।

शैलेश कुमार शर्मा
आशुलिपिक

केन्द्रीय राजस्व खेल बोर्ड द्वारा आयोजित
क्षेत्रीय खेल स्पर्धा - 2012 (पश्चिम क्षेत्र) के दौरान हुई
प्रतियोगिताओं का अवलोकन करते हुए उच्चाधिकारीगण व अन्य
विभागीय सक्रिय आयोजक अधिकारीगण

सासण गीर - गुजरात

PRINTED BY - AJAY OFFSET - 9825477745
TYPE SETTING - HARIOM COMPUTER - 9376198829